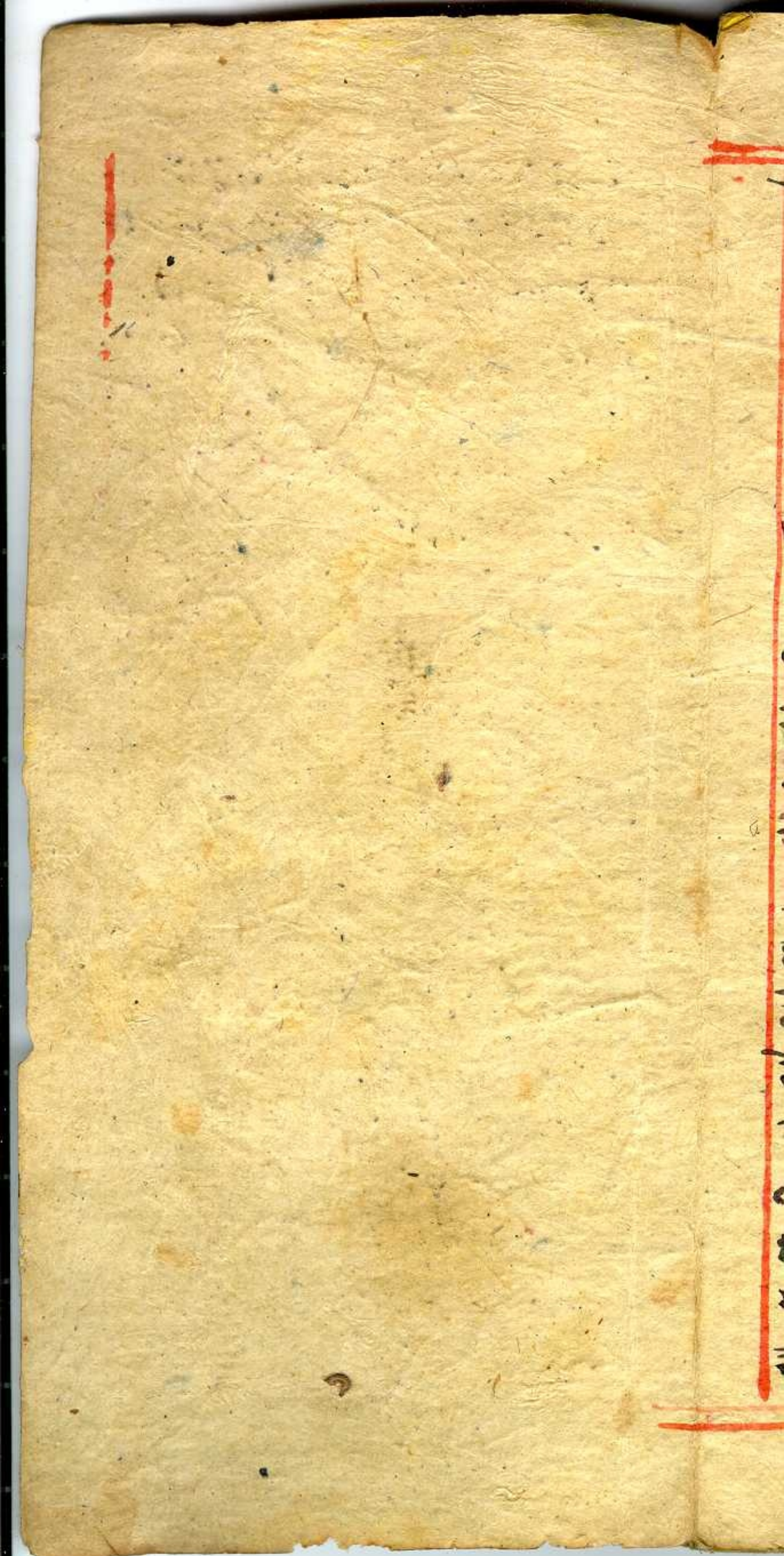


204 →
Kāmāgri
yajña vidhi

2419 I
ASHA ARCHIVES

204 →
Kāmāgri
ṣaṣṭha vāṅkī

2419 I
ASHA ARCHIVES



ॐ नमः॥ श्रीगणेशाय नमः॥
श्रीपरदेवतायै॥॥ प्रथमा मा
त्रियशविधीविरच्यते॥ नैऋत्य
कोशाशः उदकं वलिविया॥ वलिपा
न १ दोनु श्वोय॥ प्रघ पात्र नया॥
स्नान॥ व्येन॥ सिन्धुरा॥ जजमका
॥ स्वान॥ प्राचमन॥ प्रथम्यादि॥
श्रीसूर्यार्घ्य॥ गुरुनमस्कार॥
करं प्रक्षुब्ध्यास॥ जलाघ पात्र पू
जा॥ भुतभुक्ति॥ प्रान्मपूजा गुह्य
नामाक्षरं॥ क्षेत्रवडुके गुरा
योगिनी॥ भूतवलि॥ ॥ ॐ क्रौं क्रौं
द्रुं सर्वभुतेश्वरमहभुतेश्वरमा
हानन्दघरोटेश्वरलंकेश्वरविज
येश्वरमहानृत्येश्वर॥ क्रौं अघो
रेश्वरद्रुं महश्मशानेश्वरप्रम
भूतेभ्योऽमांगन्धधूपदीपार्घ्य
वलिंगुद्रुं ममशान्तिकरुखा
हा॥ ॥ ॐ जूं सः क्रौं समस्तजक्ष
भूतं स्वस्वदिशाभूलपाणिआ
शाहुं ३ फट् वलिंगुद्रुं ऐं लीं लीं

स्वाहा ॥ चराड नाक्षत्र पुष्प धूप
दीप ॥ जाप ॥ ॐ श्रीं श्रीं स्वाहा १०
लोत्र ॥ पूर्व दिशि रा पश्चिमाक्ष
र ॥ दिशा पूर्वादिवासे स्थिता
क्षत्रे सो वदु भूत इया हर नो हर
मनाथाय च ॥ शमशा हो शुरमा
दिदेव विभुर्वैज सो कार्तिडुखा
प्रहा ॥ नित्यानन्द नये नमाभि
सननं वल्पाचनं पूजाविधि ॥
अत्र गन्धादि ॥ वलि विसर्जनं
अस्त्रन ॥ ॥ वलिथान सद्योय
॥ ॥ नतो मराड पशो धयेन ॥
अक्षत मादाय ॥ दिग्वधने क
त्वा ॥ ॐ सुप्रसर्पतु ये भूता
विघ्नकता र्त्तन श्यतु शिवा
स्तया ॥ ऐं अस्त्राय फट् ॥ दस
दिगसं होले ॥ फट् पादे भू
मिस ॥ श्रीं श्रीं वाक्वाधिपत
ये नमः ॥ ब्रह्मणे नमः मराडप
दथस ॥ इति ॥ ॥ नतो कल
श पूजा ॥ अम्बं मय ॥ श्री मू
र्त्यार्घ्य ॥ गुरु नमस्कार ॥

॥ ग्यासः ॥ ॐ जुं सः अस्त्राय फट्
॥ कर शोधने ॥ ॐ जुं सः अङ्गुष्ठे
येन मेतः ॥ ॐ जुं सः नज्ज न्याय
नमः ॥ ॐ जुं सः मध्ये माय नमः
॥ ॐ जुं सः अनामिकाय नमः
॥ ॐ जुं सः कनीषाय नमः ॥
॥ ॐ जुं सः करतल पृष्ठाय नमः
॥ ॐ जुं सः हृदयाय नमः ॥ ॐ
जुं सः शिरसे स्वाहा ॥ ॐ जुं सः
शिखायै वौषट् ॥ ॐ जुं सः क
वचाय दू ॥ ॐ जुं सः नेत्रत्रया
यै वौषट् ॥ ॐ जुं सः अस्त्राय
फट् ॥ ॐ जुं सः क्षै ईशानाय
उर्ध्वक्ताय नमः ॥ ॐ जुं सः यं
तत्पुरुषाय पूर्वक्ताय नमः
॥ ॐ जुं सः रै अघोराय दक्षिण
क्ताय नमः ॥ ॐ जुं सः वं वामं
देवाय उत्तरक्ताय नमः ॥
ॐ जुं सः लै सद्योजानाय ष
श्रिमवक्ताय नमः ॥ वक्त्रे न्यो

स॥ जलोपात्र अर्घपात्र पूजा
 ॥ भुजशुद्धि ॥ आत्मपूजा ॥ क
 स अङ्गुलिनखाये ॥ गोमजापू
 जा ॥ ॥ मूसासनाये नमः ॐ गुं
 स ॐ श्री नमः ॥ ॐ श्रीं की नमः
 ॐ श्रीं कीं की नमः ॥ ॐ श्रीं कीं की
 ग्लौ नमः ॥ ॥ ॐ श्रीं कीं की ग्लौं
 णापतय नमः ॥ ॐ श्रीं कीं की ग्लौं
 गंगणपतये वरवरदे नमः ॥
 ॐ श्रीं कीं की ग्लौं गणपतये व
 रवरदसर्वजनमे स्वाहा ॥ ॐ श्रीं
 कीं की ग्लौं गंगणपतये वरवर
 दसर्वजनमेव समान स्वाहा ॥
 प गां गीं गूं गैं गौं गः ग्लौं श्रीं कल
 गणेश्वराय स्ववत्सभासहिता
 यपाङ्कां ॥ वलि ॥ धूप ॥ दीप ॥ जा
 प ॥ ग्लौं स्वाहा १० ॥ तोत्र ॥ सिन्दुर
 शान्दमदमोदितस्तकम्मो
 त्यादि ॥ अत्रगन्धादि ॥ ॥ वडुक
 म्बोलिपूजन ॥ मयुरास्नायपाङ्
 कां ॥ श्रीं कीं कलपुत्रवडुकनाथा
 यपाङ्कां ॥ थोनं वलि ॥ धूप ॥ दीप
 जाप ॥ श्रीं कीं स्वाहा १० ॥ तोत्र ॥

श्रीशामरोत्पादि॥ अत्रगत्वादि
 ॥ अथक्षेत्रवलिपूजनं॥ गुरुन
 मस्कार॥ करश्चन्द्रन्यासा॥ जलपा
 व अर्घ्यपात्रपूजनं॥ भुजशुद्धि॥
 आत्मपूजा॥ श्रीसंवत्तानुप्राव
 हन॥ विदेवश्च॥ आधारशक्त्या
 दि॥ नरास्त्रायपाडुका॥ क्षौक्षी
 भुंक्षौक्षौक्षः श्रीक्षेत्रपालायपा
 डुकांश्च॥ अमिताज्ञादि॥ प्रज्ञा
 रणादि॥ अघोरवत्र॥ वनिशीरु
 ॥ त्रियाजलिश्च॥ वनि॥ ॐ क्षौक्षौ
 क्षौक्षस्त्रायफट्स्वाहा॥ अहरवी
 नमः॥ संसर्गकटकेनमः॥ रत्ना
 स्वीनमः॥ इमशानवाशिनीनमः
 ॥ इमसानवाशिनीनमः॥ खेचरी
 नमः॥ ईशयोगिनीनमः॥ प्रस
 भैरवायनमः॥ विकटोधरीनमः
 लम्भकूर्नीनमः॥ फेहेकार
 क्षीसः प्रेक्षेका प्रीसः प्रीयो
 गीनीभोवर्णिग क्रूरस्वाहा॥
 ॥ ५ पूर्वपीठहेतुकक्षेत्रपाला
 यनमः॥ आग्नेयपीठतृपुत्त
 कक्षेत्रपालायनमः॥ दक्षिण
 पीठाधिकारश्चित्रवेतालक्ष

त्पादि॥ अत्रगन्धादि॥ इति व
 लिपूजा॥ ॥ नमो पञ्चरवारपू
 जा॥ पुर्वह्या ५ गु॥ ॐ क्राँ क्रीँ क्रौँ
 सः श्रीसूर्याय नमः॥ ॐ शौं शीँ
 शौँ सः सोमाय नमः॥ अक्षिणह
 क॥ ॐ क्राँ क्रीँ क्रौँ सः प्रज्ञाराये
 नमः॥ ॐ व्राँ व्रीँ व्रौँ सः वृधाय नमः
 पश्चिमतोयु॥ ॐ शौं शीँ शौँ सः
 ब्रह्मण्य नमः॥ ॐ द्राँ दीँ द्रौँ
 सः शुक्लाय नमः॥ उत्तरह
 ॥ ॐ स्वाँ वीँ वौँ सः शनीश्वराय
 नमः॥ ॐ त्राँ त्रीँ त्रौँ सः राहवे न
 मः॥ दधुसवाङ्गु॥ ॐ प्राँ प्रीँ प्रौँ
 सः केतुवे नमः॥ ॐ ज्रँ सः जन्म
 रोग नमः॥ धो नं वलि॥ धूप॥ दीप
 ॥ जाप॥ मोत्र॥ सूर्य सोमो महि
 पुत्रो बुधदेव गुह्यभृगु॥ शने
 श्वरग्रहो राहुकेतुजन्म नमः॥ मि
 ने॥ १६॥ ॥ नमो कोमारीपूज
 ने॥ मयुरास्ताय पाङ्कज
 ॥ ॐ ज्रँ ज्रँ ज्रँ चूँ चूँ कोमारीका

पू

विसे पाडुकां ॥३॥ ब्रह्मा न्यादि
 ग ॥ असिता ज्ञादि ८ ॥ वलि ॥
 धूप ॥ दीप ॥ जाप ॥ जोत्र ॥ बाल
 भावे न्यादि ॥ अत्र गन्धादि ॥
 गो ग्रास पूजा ॥ पद्मा स्नाय
 नमः ॥ नन्दा येनमः ॥ भद्रा येन
 मः ॥ सुशीला येनमः ॥ सुरभिन
 मः ॥ पञ्चगो मान्त्रे भो नमः ॥
 इदं नैव ग्रंथं नमः ॥ वलिं गृह्य
 स्वाहा ॥ पयोदधी घृतोद्भूता
 पवित्राः नाश्रपावनि ॥ नित्यं
 गो मान्त्रं वन्दे मङ्गलानां च
 मङ्गलं ॥ अत्र गन्धादि ॥ इति
 गो ग्रास पूजा ॥ ॥ केवो पूजा
 ॥ श्रीमूर्त्या येनमः ॥ नारायणा
 यनमः ॥ सदा शिवा येनमः ॥ इक्ष
 देवताय नमः ॥ गृहलक्ष्मी नमः
 ॥ सूर्य नारायणं चैव सदा शि
 खेन देवता ॥ गृहलक्ष्मी न
 मोस्तुभ्यं इति नमः ॥ पूतका ॥
 ॥ ॥ अत्र गन्धादि ॥ अथ कल
 शा च न ॥ ॐ नमः ॥ आधारशक्ते
 नमः ॥ अनन्ताय नमः ॥ केदा

स्नायनमः॥ गारास्नायनमः
 पत्रास्नायनमः॥ केशास्नाय
 नमः॥ कर्णिकासनायनमः प
 त्रास्नायनमः॥ ध्यानं॥ चन्द्रको
 टिप्रभातेजश्चन्द्रार्धकनसेवरं
 ॥ एकास्यालोचनं त्रिनिविशुद्धौ
 हारवामधः॥ उत्संगासामहाल
 क्ष्मीश्वेताज्ञालोचनं त्रिनि॥ मृत्यु
 जयसमालोकावरदाभयसंख
 धाः॥ द्वयोः कलशसेतुसंधनाश्रू
 लशक्तिपातकं॥ नानाभरणसो
 भांगिहारकेयूरमणिना॥ चन्द्र
 व्यास्नाचसंपूर्णसंस्थितापरमे
 श्वरैः॥ त्रियाजलि॥ ऐं पद्मे ॥ अ
 लक्ष्ममहासेनसंमोहनं ॥
 सकलनिर्धमत्रदेवता ॥ क
 लानत्वाधिपतयवलविष्णु
 प्रात्मने प्रात्मविद्याशिवनत्वा
 ये स्तुतिः श्रीसम्पूर्णकलशमूर्त
 येन ॥ ॐ कां ॥ ॥ ॐ जुं सः अमृ
 तिसंयनमः॥ ॐ जुं सः अमृति
 सभैरवायनमः॥ ॐ जुं सः त्रिपुर
 सुन्दरीमूलमंत्रन॥ भैरविमूल
 मंत्रं॥ प्रादिन्यादिनवग्रहैर्भै

नमः॥प्रतिप्रदादिनिधिभ्योन
मः॥कनिकादिनक्षत्रेभ्योनमः
विस्कंभादियोगेभ्योनमः॥मे
खादिवायशराशिभ्योनमः॥
मूहुर्तेभ्योनमः॥गंगादिसप्तर्ष
मुदेभ्योनमः॥सप्तऋषिभ्योन
मः॥इन्द्रादिदशलोकपालेभ्यो
नमः॥प्रस्रस्वस्थामादिअस्रविरे
जीविभ्योनमः॥प्रस्रकुलनागे
भ्योनमः॥श्रीसम्पूर्णकलशायै
नैवेद्यंनमः॥वलिगुंफ्रश्चाह
॥सहज॥क्रस्कन॥श्रीयेनमः॥
सिंधुमुं॥श्रीलक्ष्मीनमः॥वलि
॥प्रावाक्ष॥धेनुमुद्रा॥आप॥
लोत्र॥देवोसेशाहवीणांयुन
मपिचपटपल्लवैकुम्भमूर्ति
गोक्षीरतीर्थनारये॥कुसुमफ
लसुगंधौवोसाधिवीहरत्नः॥
दीपैद्यत्राक्षमाद्यैमलयनर
रसेद्यस्त्रिसिद्धिर्दुर्वा॥पलेपै
नैवेद्येधूपै॥स्वकुलजविधि
कनंनमः॥पूर्णकुम्भश्च

गन्धादि॥ नमस्कार॥ शनिकल
शास्त्रेन॥ ॥ ततो कुरादसमीपं
गत्वा॥ अथ सिंहानपूजनं॥
ऐं आधारशक्तिकमलास्त्राय
नमः॥ सिंहास्त्राय नमः॥ ॐ भूर्भु
वः स्वकुस्मासनाय नमः॥ ॥
ऊर्ध्वकेशिविरूपाक्षिमांसशो
नितभोजनी॥ निष्ठुदेविशि
वामध्येममरक्षार्थसर्वदा
शिखाजपलेप॥ आसनस
चोने॥ शनिसिंहासनपूजा॥
॥ ॥ ततो आवम्य॥ श्रीसूर्या
र्घ॥ अथादि॥ श्री ३ परदेव
तायै पूजनकर्तुं श्रीमहान्त
एतैरवायसुसोर्ध्वे नमः॥
पुष्पनमः॥ ॥ गुरुनमस्का
र॥ न्यास॥ ऐं कीं मौं स्फीं अ
स्त्राय फट् ४॥ ऐं कीं ३ अ
र्धुं साभ्यां नमः॥ ॐ कीं स्फीं
नर्जनीभ्यां नमः॥ मौं ॐ
स्फीं मध्यमाभ्यां नमः॥ ॐ

ऐं कीं अनामिका भ्यां नमः
लू लीं स्त्रीं कनिष्ठकाभ्यां
नमः॥ सौं लू स्त्रीं करनल
पृष्ठकाभ्यां॥ लू नमः॥ ऐं
कीं हृदयाय नमः॥ स्त्रीं स्त्रीं
लू शिरसे स्वाहा॥ सौं लू स्त्रीं
शिखायै वषट्॥ ऐं कीं किं व
वाय हं॥ स्त्रीं स्त्रीं लू नेत्रत्र
पायवो वषट्॥ लू सौं स्त्रीं श्र
स्त्राय फट्॥ शनिनाथस
॥ ॥ जलपात्र अर्घपात्र पूजा
॥ भुजशुद्धि॥ आत्मपूजा॥
अथः अग्नि कुराड सोधनं
॥ अस्नादशसंस्कार॥ ऐं लीं
सौं कीं स्त्रीं स्त्रीं त्रिपुरसुन्द
र्य लू लू लू नमः॥ निरि
क्षरां॥ ज्ञानदिक्षिन सोय
ऐं अस्त्राय फट्॥ ताडनं॥ ऐं
कवेचाय हं॥ प्रभुक्षरां॥
ऐं अस्त्राय फट्॥ खनने कु

एष्टानेसधारके॥ कीं शिर
सेस्वाहा॥ ५ धार न कुरासचा
कायाव वाय॥ ऐं हृदयाय न
म॥ पूरनं मयवचानं थुने॥ कीं
शिरसेस्वाहा॥ ममीकरणां म
ठहने॥ सेचने कुशपुरनेये
॥ ऐं कवचाय हुं॥ अस्युक्षरां
ऐं अस्त्राय फट्॥ कुराड दन
जाय कुराडसा॥ ॥ ब्रौ नमः
संमार्जनं॥ विरे वृ पनेने
मकलाह पंभावय न कल्प
नात्तं॥ ऐं कवचाय हुं॥ विशुनी
वेष्टने॥ कुराडसस्वश॥ ऐं हृ
दयाय नमः॥ न्यादि॥ ऐं कव
चाय हुं॥ लेपने॥ ऐं कवचाय
हुं॥ संमार्जनं॥ कुशने अग्नि
कुराडसपोय॥ ऐं अस्त्राय फ
ट्॥ वशीकरणां॥ ऐं हृदयाय
नमः॥ कुनौ शुभै॥ चतु पंथ
कुशत्यागदयकं नय॥ क
राडसा॥ शनि अस्त्रादश संस्क

पञ्चतन्त्रमंत्र॥ ऐंकीं हृदयाय
आवाह्य॥ योनिमुद्रा २५

॥ अथ करासोधनं॥
ऐंकीं कवचाय हुं॥ करास्य
लुभं तरस कशने पुधा
ने॥ अक्षयाननं॥ ऐंकीं क
वचाय हुं॥ करास्य मध्ये लु वि
हरासनं॥ सौं श्रीं अस्त्राय
फट्॥ लाजा॥ लु धान्यव्री
हि क्षेपनं॥ गायत्रि॥ ऐं त्रिपु
रादेवी विष्णु हे कीं कामदेवा
ये धिमहि सौं नन्दो सुन्दरी प्र
बोदयान्॥ कसासनं॥ त्रिम
त्रिसो लिखे लोखा अशुक्ष
रां हृदयादिन पूजनं॥ कीं
स्त्रीं नमः॥ घृतासनं॥ षडङ्गे
लु न संपूज्य॥ आवाहनादि
॥ योनिमुद्रा॥ स्तौ वज्रपीठा
सनाय नमः॥ योगपिठास्त्रा
य नमः॥ वागेश्वरी पूजनं
॥ ऐं कीं सौं कीं स्त्रीं श्रीं भग
वं न कुल लु लु लु वागे

स्वर्ग्ये नमः॥ ध्यान॥ वागीश्वर
 शि मृतु स्नानां नीलेन्द्री वरस
 निभो॥ वागेश्वरेण संयुक्तो
 मुपचारैः प्रजयेत॥ सङ्गिज
 संपूज्य॥ वागेश्वर विष्णो क
 त्वं भूरये॥ जजमानने॥ आ
 वाय्ये काष्ठद्वये॥ काष्ठप्रोक्ष
 णां॥ शिनाने मंत्र॥ ऐं विष्णो क
 लायनमः॥ दक्षिण उत्तर हा
 यके॥ ऐं शान्तिके लायनमः
 पश्चिम न पूर्व हायके नने॥
 ऐं प्रतिष्ठा क लायनमः॥ उ
 त्तरा दक्षिण हायके नने
 ऐं शान्तिके लायनमः॥ पूर्व
 न पश्चिम हायके नने॥ ऐं
 कै प आत्मनवायनमः॥ न
 स्थापरि मंत्र॥ ह्रीं हृद वि
 श्रान्तवायनमः॥ सौं स ४
 शिवनवायनमः॥ श्वजे हो
 मसितने॥ चेतसि पुरजज
 मका स्वारा घ्राये॥ पूजनं

ऐं ह्रीं सौं भुलोकाय नमः॥
ऐं ह्रीं सौं भुवलोकाय नमः॥
ऐं ह्रीं सौं स्वर्गलोकाय नमः॥
ऐं ह्रीं सौं महलोकाय नमः॥
ऐं ह्रीं सौं जनलोकाय नमः॥
ऐं ह्रीं सौं नपलोकाय नमः॥
ऐं ह्रीं सौं सत्यलोकाय नमः॥
थोने क्रसने होमसि पूजा॥
मध्ये स पूनन हं शान्तिना क
लाय नमः॥ गायत्री नमः॥ ऐं ह्रीं
सौं क्लीं क्लीं क्लीं सर्वतन्वाय
स लु लु लु लु मी धाय नमः॥
॥ मूलं स्वर्गं नमः संपूज्य ॥ आ
वाह्य ॥ विश्वराज योनि मुद्रा
॥ सिमन्ता प्वाठ सूर्य कान्ति
मिस च्चाये ठ वक देव रोग न
या ॥ नृपं धनादि ॥ दीपरो हन
लक्ष ॥ भूत बलि ॥ ईका पल्का
न गाले ॥ अस्त्र मंत्र रा ॥ ऐं
किणी शिवि चैको क्क रा ये
क्रः अस्त्राय फ ॥ ३ ॥ बलि ॥
भूताय विविधा कारा भूवि

दिव्यां त्रीक्षेत्रे॥ पाताल न
लं वासिन्मानेन न स्पृशति शिवाज्ञ
का॥ पिता रने पुरिकाया वस
रिम्पलासनय मंत्र॥ ऐं किरि
रवित्रैको कृष्णायै कः प्रस्ता
ये फट् ३॥ क्ववादाये हूं फट् ॥
पिकाया वतयः क्ववादाग्नि
पूजनम् ॥ षडङ्गेण ॥ आहुति
॥ किरि रवित्रैको कृष्णायै क
अस्त्राय फट् ॥ क्ववादाग्रये
स्वाहा ॥ ३॥ ध्वनं घृताहुति ॥
क्ववादाग्नि विसर्जनं ॥ पि
रवाला खुसनय ॥ ॥ पुनः शु
धा निरीक्षणादि ॥ चतुसस्का
र ॥ ऐं लीं सौं कीं क्षीं श्रीं न
म ॥ निरीक्ष लूं लूं लूं लूं
॥ ऐं अस्त्राय फट् ॥ प्रोक्षणां ॥
॥ ऐं कवचाय हूं ॥ अवगुण्ठनं
॥ धोने चतुसस्कार ॥ चेतसि
धुरं जजमका-स्नानं ॥ पूज
नं ॥ हूं जठराग्रये नमः ॥ हूं
वैन्दवाग्रये नमः ॥ हूं भूति

काग्रयनमः॥ ऐं राँ रीँं श्रीं
चैनं न्यायनमः॥ ऐं कीँ मीँ कीँ
कीँ मीँ कामाग्रयुखाह्वं॥
लुं लुं॥ मीँ दूँ कीँ सोलीं
ऐं॥ २७॥ लुं लुं लुं मूलव
उज्जत॥ आवाह्य॥ धेनुमुद्रा
॥ कण्डस्योऽग्रे त्रिभामयेन
॥ ३॥ दक्षिणावर्तना॥ वाक्य॥
श्रीसंवत्स॥ जानुभ्यां भूमौ धृ
त्वा॥ अथादि॥ मासनक्षत्रे
जपलपेमंत्र॥ पञ्चदशीं
पर्ववत्॥ उद्धवमद्रया॥ प्र
तिस्थापने॥ कीँ कीँ दूँ व
क्रिचैनं न्यायनमः॥ ॥ लुं का
मेश्वरवीजं श्रीं निस्सृत्वा॥ कु
लवागेश्वरीसगुणनादिकाया
मात्मसंमुखं क्षिप्य॥ स्वस्ति
वाक्य॥ स्वस्ति कोलिकं सर्वं वा
स्वस्ति मंत्रपदादयः॥ साधका
हृदयाद्वे सुआज्ञालीनो नमो
भुते॥ सुरपतिपुलक्ष्मीं

भनेनस्पलक्ष्मीप्रसरनिमिज
गेहेयस्यदैवस्यमाये॥ बहुवि
विधकलानिपात्रभूतस्यनस्य
नस्यविभुवनविदितासाज्जंभ
नेस्यनिराद्या॥ कएलीविन्दु
संभूतशक्तिविपप्रकाशकं॥
दिष्यज्ञानंपदंशान्तं काममोक्ष
शिवपदं॥ अपरलसमेतंका
मवादिप्रदिपंनिखिलनिभिर
दुखनायतेवलोकानूर॥ दहं
निसकलपापं पापनेपापना
संभंविभुवराकलधीपंवदि
चंद्रार्कंरूपं॥ गव्याज्येनपरि
पुनंमितिहरंज्ञानप्रकाशाम्प
दं॥ अतजलेमयंमुवर्णाच
षकै॥ कर्पूरवनिपुनं॥ वि
नेवोधकरंसमस्तमुखदेव
रिद्रःडखाग्रहं॥ दीपायंसुर
कव्यकाविरचिनेश्रीसुन्दरी
प्रियतां॥ स्वस्तिशभवतु॥
मालतीपठेत्॥ ॥ पञ्चव

लिंगध्यात॥ षडङ्गे हृदयमंत्रे
 रा॥ आघाथ॥ का सुधीयं॥
 नासिचक॥ ऐं भद्राग्रये नमः
 ॥ संपूज्य॥ अन्नराजपलपे
 धार॥ वागेश्वरी कुशकद्व
 नरक्षाविय॥ ऐं कीं सौं अक्ष
 भैरवाय नमः॥ कीं श्रीं पिं श्रि
 मवक्त्राय नमः॥ ॥ लूं संपूज्य
 ॥ यवनिलअक्षतघृतनवा
 लाववियमंत्र॥ ऐं कीं हृदया
 यस्वाहा॥ आहुति लूं ॥ ३॥ ऐं
 गङ्गाधानाय स्वाहा॥ घृताहुति
 ॥ ३॥ गङ्गाधान॥ १॥ ऐं इक्षभैर
 वाय नमः॥ ऐं कीं सौं कीं उत्तर
 वक्त्राय नमः॥ संपूज्य लूं ॥ कीं
 श्रीं शिरसे स्वाहा॥ आहुति॥
 लूं कीं पुंश्रवनाय स्वाहा॥
 ॥ घृताहुति॥ त्रयोमासे नजी
 वभूतं॥ पुंश्रवर्त॥ ऐं कीं सौं
 उक्षभैरवाय नमः॥ सौं श्रीं
 दाक्षिणावक्त्राय नमः॥ लूं संपू
 ज्य॥ कीं श्रीं शिखाये दो
 लूं

मदस्वाहा॥ आहुति॥ ऐं कीं
उर्ध्ववक्ताय नमः स्वाहा लु॥
आहुति॥ घृताहुति॥ उर्ध्वव
क्त॥ ऐं कीं सौं स्त्रीं पुर्ववक्ता
य स्वाहा॥ आहुति॥ घृताहु
ति॥ पुर्ववक्त॥ ॐ सौं सीं द
क्षिणवक्ताय स्वाहा॥ लु॥ आ
हुति॥ घृताहुति॥ दक्षिणवक्त
॥ ऐं कीं उत्तरवक्ताय स्वाहा॥
लु॥ आहुति॥ घृताहुति॥ उत्त
रवक्त॥ कीं स्त्रीं पश्चिमव
क्ताय स्वाहा॥ लु॥ आहुति॥
घृताहुति॥ पश्चिमवक्त॥ सौं
सीं परापरवक्ताय स्वाहा॥ आ
हुति॥ घृताहुति॥ परापर
वक्ताय॥ हृदयादि॥ षडङ्गना
ति॥ अङ्गश्राहुति॥ घृताहुति
पञ्चवक्त॥ पञ्चादशनेत्र॥
अज्ञानिकल्पना॥ सत्मासन
॥ अङ्गवक्त॥ गाक भालपे॥ शी
मं तो नयनं॥ ऐं कीं सौं स्त्रीं ऐं
किरीरविच्चेनम॥ संपूर्णं ज्य
थनं आहुति॥ घृतआहुति॥

दसमेगर्भसम्पूर्णमङ्गलास्वा
हा॥ मासा पूर्ण॥ ४॥ ऐं ह्रीं सौं
मक्षभैरवाय नमः॥ ऐं ह्रीं सौं
श्रीं श्रीं श्रीपुर्ववक्राये नमः॥
ह्रीं संपूज्ये॥ ऐं ह्रीं सौं कुं क्रौं
॥ श्रीहृदयाय नमः ॥ ह्रीं
आहुति॥ ऐं जानकमाय स्वाहा
घृताहुति॥ ऐं वक्रये कामाग्नि
मूर्त्तये नमः॥ संपूज्य॥ ऐं ह्रीं सौं
कीर्णरवित्रे कोट्कराय ऐं अ
स्त्राय फट्॥ अर्घपात्रोदकेन
स्नानं॥ ऐं ह्रीं सौं कुं क्रौं श्रीहृ
दयाये नमः॥ ॥ श्रीशोमंत्रं
॥ सुवर्णकंकनरक्षाविये॥ अ
ग्निनां जानकम॥ ऐं ह्रीं सौं की
र्णरवित्रे कोट्कराय ऐं अ
स्त्राय फट्॥ अर्घपात्रोदकेन
प्रोक्षणां॥ ऐं ह्रीं सौं मक्षभैर
वाय नमः॥ ऐं ह्रीं सौं कुं क्रौं श्रीं
ऊर्ध्ववक्त्राय नमः॥ ॥ संपूज्य
ऐं ह्रीं सौं कीर्णरवित्रे कोट्
कराय ऐं अस्त्राय फट् स्वाहा॥

आहुति॥ सद्यमुक्तकामायसा
 हा॥ घृताहुति॥ ऐंकीं सौं कि
 रणी२ विज्ञे को कृणाये ऐं अ
 स्वायफट्॥ थोमंत्रनघयु॥
 मीघोयके॥ ऐंकीं सौं कुं ऐं
 कवचायहुं॥ थोमंत्रलृणार
 आविय॥ कुशनेपुधारमंघ
 लायेभिनंनय॥ ऐं कलवागे
 श्वरयेनम॥ संपूज्य॥ हेमा
 भरणादेवाविविंनयेत्॥
 ऐंकीं सौं कि रणी२ विज्ञे को
 कृणाये ऐं अस्त्रायफट्॥
 थोमंत्ररायेभिनंअमिक्तरे
 शहाय॥ लंखरां॥ ऐंकीं सौं कि
 रणी२ विज्ञे को कृणाये ऐं अस्त्रा
 यफट्॥ ताडनं॥ ऐंकीं सौं कुं
 ऐं कवचायहुं॥ अभ्युक्षार्णि
 ऐंकीं सौं कि रणी२ विज्ञे को कृ
 णाये ऐं अस्त्रायफट्खाहा॥
 षट्समीदहोम॥ द्वा॥ लारमुन
 म॥ अग्निसलाहमदयके॥
 अष्टसमीधहोम॥ ण॥ चेल

सचोपोलथुजवश्चसिताज्ञा
दिनघटे॥ सद्यमुनकनाशं॥
नतोवेदीस्थापरां॥ ऊशग्रंथी
समिधचतुर्वेदीसतय॥ वे
दीपूजनं॥ पूर्वे॥ ओद्यास्नाय
नम॥ ऐंकीं सौं॥ श्रीओदी
सनाथश्रीओद्या॥ स्वापाड
कांपूजयामिनम॥ ॥ दक्षिण
॥ गालासनायनम॥ ऐंकीं सौं
॥ गालेश्वरनाथश्रीगाल
॥ स्वापाडकांपूजयामिनमः
॥ पश्चिम॥ पूर्णगीरिपीठा
सनायनम॥ ऐंकीं सौं॥ श्री
श्रीपूर्णसनाथश्रीपूर्ण
स्वापाडकांपूजयामिनमः॥
उत्तर॥ कामरूपपीठासनाय
नम॥ ऐंकीं सौं॥ श्रीकाम
रूपनाथश्रीका॥ मास्वापा
डकांपूजयामिनमः॥ ॥
शनिवेदिस्थापनं॥ षडङ्गेन
संपूज्य॥ ॥ अथब्रह्मास्थाप

नं॥ **श्रवसासनासनसमिनेकान**
य॥ कशपु१२नयपूजनं॥ हं
सासनायनम॥ पीनपीनं च
तुर्वाहुव्रह्माणं च नुराननं॥ हं
सवानं च विश्रानंदरागक्षभुक्
मंदतु॥ वैव्रह्मा मूर्तय पाडका
॥ ऐं लीं सौं ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ
व्रह्मरोपमहत्माय कृष्णार्ध
धिपतये पाडका पूजयात्मी
॥ षडङ्ग॥ आवाहनादि॥ पञ्चमु
द्रोदशयेत्॥ ॥ अथ परिणत
स्था॥ अर्घ्यपात्रोदकेन अस्त्रेन
प्राक्षनं॥ मिसंपते॥ ३॥ तं अथ
नेऽङ्गः श्रीहीवहनय॥ कशग्रंथि
तय॥ चेतसिंधुरजजमका स्वा
नतय॥ ॥ पूजनं॥ ऐं लीं सौं वि
श्रुवेचक्रहत्माय नागाधिपतय
नम॥ प्रणीत उत्तवेदी सतय॥
वाक्य॥ अननं पून्यरी काक्षं फलं
नागशानेयुतं॥ विन्दुधामप्रती
काशं कृष्णीं हृत्प्रपूजयेत्॥

पूजनं॥ गरुडासनाय नमः॥
वैविष्णुमूर्तये नमः॥ वाँ वीँ वूँ व्रूँ
श्रीविष्णुपाङ्कां पूजयामि॥
सङ्ग॥ प्रावाहनादि॥ वैकुण्ठेश्वर
॥ इति प्रणीतस्थापनं॥ अग्नि
कराङ्गे वदोऽसं॥ बलि वीर्य॥ मे
त्र॥ पूर्व॥ तुँ इन्द्राय वज्रं हस्तायै
सुराधिपतये नमः॥ आग्नये॥
तुँ आग्नये शक्ति हस्ताय ते जाधि
पतय॥॥ पक्षिणा॥ मूँ यमाय
दराङ्ग हस्तायै प्रेताधिपतये नमः
॥ नेत्रात्म्या॥ इतूँ नेत्रात्म्याय खड्ग
हस्ताय राक्षसाधिपतये नमः
॥ पश्चिमा॥ वूँ पराङ्गाय पाश
हस्ताय जलाधीपतये नमः॥
वायुव्य॥ यूँ वायुव्यध्वज हस्ताय
पद्मनाधिपतये नमः॥ उत्तर
॥ सूँ कुबेराय गङ्गा हस्तायै धना
धिपतये नमः॥ ईशान॥ ई
शानाय त्रिशूल हस्तायै भूना
धिपतये नमः॥॥ अधः॥ अथ
नंताय चक्र हस्तायै नागाधिप
तये नमः॥॥ उर्ध्व॥ ॐ प्रह्लादो

पद्महस्ताय स्वर्गाधिपतये न
मः॥ थोने नं वलि॥ इति लोका
पाल॥ पुनः पूजना॥ ऐं ह्रीं सौं
अवधवर्गो पूर्वपिठाधिकारे हेतुक
श्मशानाधिपतये महाभैरवाय सा
ङ्गाय सगणपरिवाराय नमः॥
ऐं ह्रीं सौं कपवर्ग आग्रये पीठाधि
कारे त्रिपुरांतकायेशिवारावश्मशा
नाधिपतये महाभैरवाय साङ्गाय
सगणपरिवाराय नमः॥ ऐं ह्रीं सौं
चपवर्गो दक्षिणापिठाधिकारे अ
ग्निदेवालयूमाकुलमहाश्मशान
ाधिपतये महाभैरवाय साङ्गाय स
गणपरिवाराय नमः॥ ऐं ह्रीं सौं
टपवर्गो नैऋत्यपिठाधीकारे अ
ग्निजीह्वाय घोरार्धकारे महाश्म
शानाधिपतये महाभैरवाय सा
ङ्गाय सगणपरिवाराय नमः॥
ऐं ह्रीं सौं तपवर्गो वरुणापिठाधी
कारे कात्वाक्षपतिभ्य महाश्मशा
नाधिपतये सगणपरिवाराय न
मः॥ ऐं ह्रीं सौं पपवर्गो वायुवाधि
ठाधिकारे कलारीनशुलभंगमहा
श्मशानाधिपतये महाभैरवाय

शास्त्राय सगण परिवाराय नमः
॥ ऐं ह्रीं सौं य प व र्गे ईं इ त्तरु पि षा धि
कारे एक पादाय हौं हौं हौं वरुं श्म
शानाधिपतये महाभैरवाय साक्षा
य सगण परिवाराय नमः ॥ ऐं ह्रीं
सौं श प व र्गे ईं शान पीठाधिकारे भि
म रूप महाभैरवाय साक्षाय सग
ण परिवाराय नमः ॥ शनिपूर्वादि
स्मृशानांतं पूज्य ॥ ऐं ह्रीं सौं क्रौं
क्रौं क्रौं क्रौं क्षौं क्षौं क्षौं पिठाधिकारे
ग्रमराय पानात महाश्मशाना
धिपतये शठक महाभैरवाय स
क्षा य सगण परिवाराय नमः ॥
अथ ॥ ऐं ह्रीं सौं क्रौं क्रौं क्रौं क्रौं
क्षौं क्षौं क्षौं क्षौं क्षौं पिठाधिकारे कुम्भ
पूज्याय रुद्रश्मशानाधिपतये ॥
क्षौं अचलभैरवाय साक्षाय सग
ण परिवाराय नमः ॥ रुद्र ॥
॥ शनिहेतुकादि ॥ अथ करुण
वाह्य ॥ असिनाक्षादि य ॥ वृक्षा
न्यादि य ॥ पूजनं ॥ थोने न वलि ॥
॥ ऐं ह्रीं सौं क्रौं अशिनाक्षभैरवा
य अंबुह्वायणी शक्ति साहिनाय
नमः ॥ क्रौं रुद्रभैरवाय कर्मार्हे

श्रीशक्तिसहिताय नमः॥ कौंच
 राभैरवायवंकौ मारीशक्तिसहि
 ताय नमः॥ कौंचोवभैरवायवं
 वेष्टमवीशक्तिशहिताय नमः॥
 कौंचमन्त्रभैरवायनैवाराहिश
 क्तिसहिताय नमः॥ कौंचपात्नी
 शभैरवायपेंद्रायणीशक्तिस
 हीताय नमः॥॥ कौंचभीषणभै
 रवाययंचामुराणशक्तिसहिता
 यनमः॥॥ कौंचसंहारभैरवायसै
 महालक्ष्मीशक्तिसहिताय न
 मः॥॥ थोनेनं वलि॥ अग्निलो
 कपालसर्वेप्रार्थनायाय॥॥
 भोभोलोकपालाय जज्ञा संर
 क्षण थाय विष्णोर्नो ध्वंसनाय
 च॥ सूर्जप्रवाहनास्तेवसंनिध
 नशिवा शया॥॥ शनिप्रार्थना
 ॥ ननोऽश्रवा सोधन॥ ऐं अस्त्रा
 य फट् ३॥ अर्धपात्रया लंघण
 हाय॥ शनिचतुसस्तार॥ फट् ३
 पुचोदयकावकादिहाकं काया
 वश्रवापृशेत्॥॥ ऐं कौंचिप्राम

ॐ

कशपोलनक्रवापोलभीय१

नत्वंस्वधयामिस्वाहा॥ श्रीं
विद्यानत्वंसोधयास्वाहा॥ श्रीं
कशमध्येनक्रवामध्येसठि
य॥ सौंसींशिवनत्वंसोधया
मीस्वाहा॥ कशचोनक्रवा
चोसाधिय॥ अस्त्रेनक्रवासम्मा
ज्जर्त॥ आकाशवारिपुरां क्र
वासलंमथाजवक्रशनवाल
ऐंविपुरोदेवीविज्रहेकीकामेश्व
रविमहीसौंननोकिन्नप्रचोद
यान्॥ लखक्रवासकायावक्र
वासैतय॥ क्रवानअतिक्रएजे
यकोव॥ अग्निसप्रणीतसंनय
॥ अस्त्रेनप्रोक्षरां॥ क्रवासवेत
सिंधुस्रजमकास्वाननय॥ ॥
पूजनं॥ क्रवाशक्तयनमः शि
वायनम॥ क्रकक्रवाभ्यांनमः
॥ शनिक्रवापूजनं॥ कवचेनक्र
वाजिसुन्ननवेष्टयेत्॥ क्रकक्र
वाभ्यांनम॥ षडङ्गेणसंपूज्य
आवाह्य॥ धेनुमुद्रां॥ सोधलपा
कशप्रासततयावथवज्रवला
सक्रवातये॥ ॥ ननोविश्वदेव

सुधनं॥ प्रस्त्रेन प्रोक्षार्ण मि
सपने॥ हृदयमंत्र राठव स
घननय॥ घनशुक्ति॥ चनुसस्का
रा॥ येकलिस घेलकनके॥ प्रह
मयीत्वा॥ घनविशुदानं॥ कश
ग्रंथिथुजवहाय॥ मन्त्र॥ ब्रह्म
रोस्वाहा॥ अग्निकराडवकुलिश
नयाव॥ विष्णुमयीध्यात्वा॥ घन
विशुदानं॥ मंत्र॥ विष्णुवेस्वाहा॥
कराडमध्यसतयाव॥ हृदमयी
ध्यात्वा॥ घनविशुदानं॥ मन्त्र॥
हृदयस्वाहा॥ मिसहाय॥ कश
नेपुमिसच्याजवघेलकेजवअ
स्त्रेरावाय॥ ॐ नमोऽमृतमैर
वीनम॥ प्रात्मादिप्रोक्षार्ण॥ कव
चेनकशनकराडजेयके॥ प्रस्त्रे
राकशदानेघोय॥ ब्रह्मग्रंथिर
विष्णुदेवताद्युवकनय॥ घेल
स्वर्वाकल्पना॥ कशग्रंथिनघन
दक्षिणभागेशुहीत्वा॥ मंत्र॥ अ
ग्रयस्वाहा॥ दक्षिणनेत्रेशुक्रप
क्ष॥ कशग्रंथिणघनवामभागे
गृहीत्वा॥ मंत्र॥ सोमायस्वाहा॥
वामनेत्रेक्ष्मपक्षे॥ कशग्रंथि

मध्येभागेगृहीत्वा॥मंत्र॥प्रश्री
 सोमाभ्यांस्वाहा॥घृतभागमध्य
 परिमध्यनेत्रे॥अग्नयेश्वरिक्त
 नेस्वाहा॥मध्येसा॥घृतभागत्र
 यंक्तत्वा॥ब्रह्मसूत्रेओघृतचतु
 वानस्पृष्टनरयेमध्येसा॥मंत्र॥अग्न
 येस्वाहा॥सोमायस्वाहा॥प्रग्निसो
 माभ्यांस्वाहा॥अग्नयेश्वरिक्तने
 स्वाहा॥थोनेघृताहुति॥हृदयादि
 ॥षडङ्गेनसंपूज्य॥ऐकवचायहुं
 ॥अवगुराठन॥कृशग्रंथिनयाव
 रक्षा॥आवाह्य॥धेनुमुद्रा॥जज
 मानघृतवलोकनवाक्य॥लीनं
 यत्रोद्धवंजसमान्जगत्प्रपूतन
 भूयते॥नमामि तदहंलीङ्गव्यक्ति
 मध्यक्तिमागतं॥आज्यसुखमुखं
 दक्षासर्वपापकनाशनं॥आज्ये
 पापहरंदक्षाआज्यपापहरंपरं
 ॥आज्यंचसुखनामाज्यसर्वमार्ज्यं
 प्रतिष्ठितं॥जजमानखातको
 स्वये॥॥नतोअग्निदशक्रिया
 ऐंकीं सों ह्रीं पुर्ववक्तायस्वाहा

पुर्व॥ ऐं कीं सों सूं दीक्षिवक्ताय
स्वाहा॥ ऐं कीं लूं सों कीं उत्तरव
क्ताय स्वाहा॥ उत्तर॥ लूं ऐं कीं सों
सूं परापरवक्ताय स्वाहा॥ मध्ये
लूं सपरापरवक्ता॥ कीं कीं
पुर्ववक्ताय॥ सों सूं दीक्षिलूं ए
वक्ताय स्वाहा॥ लूं वंनानय
नाथाने॥ घनधार॥ सों सूं दीक्षिए
वक्ताय स्वाहा॥ कीं कीं पश्चिम
वक्ताय स्वाहा॥ यं लूं नयेनाथा
ने॥ घनधार॥ कीं कीं पश्ची
मवक्ताय स्वाहा॥ सों लूं उत्तरव
क्ताय स्वाहा॥ ऐं सूं लूं परापरव
क्ताय स्वाहा॥ लूं पश्चिम उत्तर
मध्ये सहायके॥ घनधार॥ एकी
कराण॥ वक्तभिधारण॥ ऐं कीं
उत्तरवक्ताय स्वाहा॥ सों सूं लूं द
क्षिणवक्ताय स्वाहा॥ लूं ॥
कीं कीं श्रीपुर्ववक्ताय स्वाहा॥
दीक्षिलूं एणपुर्वहयावमध्ये सहाय
के॥ घनधार॥ पुर्वदीक्षिण उत्तर प
श्चिम उर्ध्व परापरवक्ताय स्वाहा
॥ वं कुलिन ये कुलिथ जाव मध्ये

सहायके॥ धृतधारश्रुवान्
थोनेवक्तुकल्पना॥ सैंलीसैं
सक्षभैरवायनम॥ सैंसुीप
रापरवक्तनयनम॥ संपूर्णज्य
सैंकिणीरविञ्चकोक्तनार्यैसैं
अस्त्रायस्वाहा॥ आहुति॥ सैंना
मकरणीयस्वाहा॥ धृताहुति॥
लीङ्गीकामाग्रयस्वाहा॥ ॥
थोमंलुङ्गा॥ कामाग्नित्वं नाम
करणी॥ ध्यान॥ हिमाकल्पं प
त्रसंस्थं त्रिणेन ध्यायेद्वाङ्मव
र्धमौलिजटाभि॥ परिविञ्चल
नस्तोयैर्विशुद्धैर्मखलोपरि॥
द्वैरगवैर्मध्यस्थमेखलायो
परिस्मरेत्॥ निक्षिपेदिक्षपरि
धी॥ प्राचीवर्जगुरुत्तम॥ प्रा
दक्षिणेन संपूज्यास्तेषु ब्रह्मा
दिमूर्तये॥ ध्यानं वाक्रियजम
ध्येगन्धाद्यैर्मनुनामुरा॥ वैखा
नरोजानवेदपदेपञ्चादिहव
ला॥ लोहिताक्षदश्यान्तेसर्वक
र्माणि साधय॥ वाक्रिजायाव

धिः प्रोक्तो मंत्र पावक वल्लभः
॥ मध्येष्वपि कोरो सुनिहृज्वा
लाह्वो यजेत ॥ अग्नये ध्यान
पुष्पं नमः ॥ शनिकामाग्निनामक
रणां ॥ ऐं कीं सौं ओक्षभैरवाय न
मः ॥ ऐं कीं श्री ऊर्ध्ववक्त्राय नमः ॥
संप्र लृ ज्य ॥ ऐं कीं श्री हृदयाये
॥ आहुति ॥ ऐं लृ फलप्राप्तना
य स्वाहा ॥ धोनं अन्नप्राप्तन ॥ ऐं
कीं सौं अक्षभैरवाय नमः ॥ संप्र
ज्य ॥ सौं सुं दक्षिणवक्त्राय स्वाहा
॥ आहुति ॥ ऐं वृजकर्णाय करणी
ये धाय स्वाहा ॥ घृताहुति ॥ वृज
कर्ण ॥ सौं सुं दक्षिणवक्त्राय न
मः ॥ संप्र ज्य ॥ ऐं कीं कवचाय
स्वाहा ॥ आहुति ॥ ऐं श्री व्रतव
धनाय स्वाहा ॥ गायत्रिप्रदानं
॥ ऐं विपुला देवी विप्रहेत्कीं कामे
श्वरी धीमहि सौं न नो तर्कान्ति प्र
बोदयान् ॥ शनिगायत्री प्रदा
नं ॥ ऐं कीं कृतवक्त्राय नमः
ऐं कीं लृ सौं सुं ऐं प्रस्त्राय फ
ल ॥ आहुति ॥ ऐं वमोक्षणा
य नमः व्रतमोक्षणां ॥ कीं कीं
लृ

पश्चिमवक्तायनमः॥ संपूज्य
॥ ऐं लीं सौं ह्रीं श्रीं ह्रीं लीं ऐं
किं लीं शिवि लुं चैनमः॥ पूजनं
॥ पञ्चदशीनां॥ आहुतिः॥ लीं ह्रीं
दीक्षासमस्तं लाय स्वाहा॥ लुं
घृताहुतिः॥ दीक्षासौं सुं पिरा
परवक्तायनमः॥ षड्वक्त्रं
कं व्यादानविधिः॥ मूलमंत्रेण
॥ आहुतिः॥ विवाहाः॥ रतिदशक्रि
याः॥ वागेश्वरीपूजनं कलवा
गेश्वरायनमः॥ कलवागेश्वर्यै
नमः॥ संपूज्यः॥ कलवागेश्वरा
य स्वाहा॥ कलवागीश्वर्यै स्वाहा
॥ आहुतिः॥ वागीश्वरः वागीश्व
री विसर्जनं॥ ऐं लीं सौं कलवा
गीश्वराय कलवागीश्वर्यै न
मो नमः॥ पितरो विसर्जनं॥
श्रुवा सवोऽजे लाचो काया व
प्रणीत सतये॥ तजो जिह्वास
कल्पना॥ नैऋत्यः॥ ऐं लीं सौं
पुं विमला हरि नवर्णाय स्वाहा
॥ पश्चिमः॥ ऐं लीं सौं ह्रीं श्रीं
यशो कंक मवर्णाय पुं स्वा

हा॥ वायु॥ ऐं लीं सौं मूं
 सर्वेश्वरी लवणाय स्वाहा
 हा॥ आप॥ ऐं लीं सौं वूं
 कामेश्वरी श्वेतवर्णाय स्वाहा
 हा॥ ईशान॥ ऐं लीं सौं हूं
 कोलिनीः पद्मवर्णाय स्वाहा
 पुष्पा॥ ऐं लीं सौं लूं मोहणीर
 कवर्णाय स्वाहा ॥ दक्षिणा॥
 मूं प्रहृणारक्तवर्णाय स्वाहा
 ऐं लीं सौं स्त्रूं खेचरी रक्तव
 र्णाय स्वाहा ॥ मध्यम॥ घृ
 तधार जुहुयान् ॥ ईशानादिम
 ध्यात् ॥ ऐं लीं सौं पुं कूं उच्चाट
 नी वशकरी स्वाहा ॥ पुं नेत्र
 त्प॥ पश्चिम॥ घृतधार ॥ ऐं लीं
 सौं मूं पुं उच्चाटनी अर्धदायी
 ज पुं पुं यनी स्वाहा ॥ वायुव्य
 उत नूर ॥ घृतधार ॥ ऐं लीं
 सौं यूं मूं अर्धदायी मुक्तिदा
 यी पुं पुं सर्वेश्वरी स्वाहा ॥
 ऐं ॥ ईशान॥ घृतधार
 ऐं लीं सौं कूं मूं मुक्तिदायी
 राजेदायी पुं कामेश्वरी
 स्वाहा ॥ ईशानो पुं वा ऐं लीं सौं

श्रीं शुभं राजदायी दाघेदायी
स्वाहा ॥ घृतधार जुहुयान् ॥
ऐं ह्रीं रसोऽमृतं मृत्युदायी
पश्चिमास्वाहा ॥ पुर्वे अग्नि
घृतधार ॥ ऐं ह्रीं सौं धूर्तिं मृत्युदा
घदायी मोहनी स्वाहा ॥ अ
ग्निदक्षिणा घृतधार ॥ ऐं ह्रीं
सौं श्रीं मृत्युदायी मृत्युदायी
अहं राख्यं यस्वाहा ॥ दक्षि
णानैऋत्यं घृतधार ॥ अस्त्रे
नवद्विजिह्वाद्येदनं ॥ ऐं ह्रीं किरी
२ विज्ञेयोक्तं राय ऐं अस्त्रा
य फट् स्वाहा ॥ नैऋत्यादि उ
त्तरातं जिह्वाद्येदनं ॥ संग्रहे स
र्वसिद्धिदा ॥ ऐं ह्रीं सौं श्रीं
शुभं रक्तवर्णाय सर्वसिद्धि
दायी स्वाहा ॥ मध्ये घृ
तधार ॥ धोने नि संधार ॥ घृ
ताहुनि जुहुयान् ॥ पञ्च स
मिध होम ॥ ५ ॥ नवमग्नेरीश्वर
ने जगत्पावनै परमं हृदि ॥ नमो
न्यदीय ह्यप्येव संस्थापे न

पुष्पयामिनो॥ धोने पडपाव
जेय अग्नि सा प्रार्थना याय
॥ समीध होम ॥ ॥ तनो घृताहु
गिविय ॥ वेडी ४ ॥ प्रस्ता प्रणी
न ॥ पञ्चवलि ॥ ईशादि १० ॥ व्र
ह्मन्पादिय ॥ प्रयागादि ॥ अग्नि
ताज्जादि ॥ हनुकादि ॥ भारग
रासं ॥ उथोकलंक ॥ पिथुक
लंक ॥ लिङ्गाचन ॥ त्रिदेव ३ ॥
फलश ॥ ऊम्मा ॥ पात्र ॥ ऐं कीं
सौं कीं अग्नि चक्रे कामगिर्य
ल लु यमित्रिसनाथान्मिके
श्री कामेश्वरी रुद्रात्मशक्ति
स्वाहा ३ ॥ ऐं कीं सौं कीं सूर्य
चक्रे गालंधर पीठे लु ओदि
सनाथान्मिके वज्रेश्वरी वि
ष्णुात्मशक्तिदेवी स्वाहा ॥ ३ ॥
ऐं कीं सौं सुीं सोमचक्रे पू
र्णागिर लु पीठे गह्वर श्री
षष्ठी सनाथान्मिके ॥ ॥
श्री भगमालिनी देवी प्रस्ता
त्मशक्ति स्वाहा ॥ ३ ॥ ऐं कीं

2419 I

2419 I

सा

सौं कौं प्रह्वचके ओदिया नपी
 ठे चर्या नाथान्मिके श्री
 महात्रिपुरसुन्दरीदेवी
 परब्रह्मात्मशक्तिस्वाहा
 ॥ मूलया ३ ॥ कौं कौं
 हौं कौं त्रिपुराच लंके
 श्रीनिन्पा श्रीपा प्र ॥
 भैरवाविया ॥ सुवरोश्वरी ॥ व
 दसमयाहुनि ॥ पश्चिम ॥ ५ ग्रच
 राणा ॥ सिद्धिलक्ष्मी ॥ काली ॥ भारा
 ॥ मूलया ॥ मालया ॥ मालको ज
 नकावविया ॥ यवरमंत्रनविय
 ॥ पूर्णायात आहुनिविय ॥ मंत्र
 ऐं कौं सौं कौं श्रीप्रह्वचके
 ओदिया नपिठे चर्या
 नाथान्मिके श्रीमहात्रि
 पुरसुन्दरीदेवी परब्र
 ह्मात्मशक्ति स्वाहा ॥ ५४ ॥ श्रीपाडका
 लनया ॥ पूर्णा वाक्या ॥ काला
 भ्राभांकयधोरविकलभयदां
 मोलिवधेदुलेखां ॥ शंखचक्रं
 कपाणां त्रिशु मपि कले र

इहतीतिनेत्रा॥ सिंहस्कधोधि
रुद्रेविभुवनमाखिलेनेत्रसाप्
रयती॥ ध्यायदुर्गाअयारव्या
विदशपरिभजांसिद्धिकामैसं
॥ घृताहुतिपूर्णा॥ ॥ ननोहोमपा
त्रमुद्धि॥ अस्त्रेणप्रोक्षणां॥ मिस
पनेत्र॥ वेननस्वस्तिकवो॥ जव
अशतनिलगोदधिःकुडुधलि॥
घृतमधुसर्षप॥ नारिफलश्री
फलजाम्बिलरक्तपद्मश्रद्धमा
ला॥ अलिणवालेमूलसङ्के
नसंपूज्य॥ प्रावाह्वधेनुमुद्रा
॥ ॥ जजमाननमस्कारंकारयत्
॥ ॥ वाक्य॥ नमामिपापकोनेत्र
पवित्रंसर्वकर्मसु॥ वैश्वानरोम
हनेत्रादेवानांहव्यदायकं॥ सर्व
कर्मानिसाक्षत्वेत्याहंभोजन
कारकं॥ अनियादिसनाथायत्रै
लोक्यहनकारकं॥ संपूज्यनेत्रनि
त्पानियज्ञकर्मसदानिच॥ आवा
र्यायगुरुत्वेचनमस्तेसानिदा
कं॥ दधिहोमान्यएपुनिक्षीरहो
मेनशान्तिकं॥ सन्मासंनुघृते

इत्था सर्वव्याधिविनाशनं॥ ऐर्य
जङ्गानिले होमादायुवद्विर्य
वे हुन॥ कस्तुर्योवसदा होमनयुगे
निराजले प्रिये॥ अर्को नासाहित व्याधि
॥ कप्रपरासका मिदं स्वादरं अर्थला
भाय अया मार्गव हुपुत्रकं॥ समिसम
यने पायं सोभागे मधूद्रो म्निणि॥
अश्वस्थं लभने त्काम इर्धा आयुज
व दने॥ कुशदर्वचिरं जीववटे आयु
काममार्थकं॥ जजमान जो पयका
व आचार्य हि हि पात्र लाय॥ आ
चार्य न वा घादन काय॥ वाक्ययाप
॥ निलाहुनि विस्मय॥ विदेव आ
दिन॥ घन आहुनि विया कन सक
र्म या जव निलाहुनि विय॥ ॥
कलश प्रनिष्ठा॥ शक्ति प्रा न वरा स
ना हुन वहा॥ प्रलाक्ष भूमंत्र कास्ते
जखुज समा लापु रं कं ला वा ला कं
भासा सुरा॥ मायारक्ष विषक्षरक्ष
कलितं मूलं अविध्वंसिनी यातां
नासि समस्त काम जननी शक्तिं
परां शां भवी स्वाहा॥ गोस्पं न कोरं
निलाहुनि विय॥ संव्याहुनि विय
मंत्र॥ ऐं ह्रीं सौं क्लीं क्लीं स्रीं
श्री प्रह्ववक्त्रे ओं ॥ ॥ ॥ ॥

दद्यात्तपीठे च र्यानाथात्मिके श्री
त्रिपुरसुन्दरीदेविषरं ब्रह्मात्मशक्ति
साहनाय स्वाहा ॥ धार ५४ ॥ निला
हुतिपूरणा वाक्य ॥ निराहुतिपूरणा
वाक्य ॥ ॥ इर्धास्पदेवतां क्रमशः
श्रमावराणागुरु पुनव्याहृतिभि
हुत्वा जीवादीनां विभावसोः ॥
एकैकामाहुतिंदत्त्वा वरिषि च्वा
क्षिरोत्माति पावकं योजयित्वा
स्वेपरिधीनवविस्तारान् ॥ नेमि
नितु कदहे मन्त्री नित्यदनुदहे
दिमान् ॥ नेत्रशिरस्य सेवधीया
नेत्रमन्त्रेण वाससा ॥ फल गृ
हीत्वा तं शिष्यं कुराडतो मण्डलं
नयन् ॥ तस्याञ्जलिपुनः पूज्यैः
पूरयित्वा यथाविधि ॥ निला
हुतिपूरणा सुमूहुता सुखाहा
॥ ओ नानता हुति ॥ प्रनिष्ठा तुल
साथनामूलधारसदेवलसेय ॥
नृपेधनादि ॥ दशक्रिया प्रानप्र
निष्ठा विद्विथं याय तुलो ॥ ॥

नतो देवा चर्चनं ॥ सां गोपाङ्ग देवा चर्च
नं करयन् ॥ धूप ॥ दीप ॥ गाप ॥ लोत्र
॥ ॥ विधि थं धुन के ॥ विदेव ॥ आ
दिन थ वर मंत्र न आहुति ॥ थ वर स
स्त्री त्रन थिय के ह्य ॥ कलेश कुम्भ
देव सा आम्नाय माल को न्याय ॥ वा
भव कामराज ॥ शक्ति ॥ मूल त्या
धार ॥ ५४ ॥ प्रतिष्ठा वा क्य ॥ ॥ प्रति
स्थितो सि देवेशि सु प्रति स्थ भुवन
त्रय ॥ शा नि ध्य प्रति गृह्णा शि स्य ग
माना य स धये ॥ सन्तो नु नु प दे
नित्यं सन्तो राज्या न थै व च य ज
मान सं नु लो यं सु पुत्र व सु बांध
वा ॥ रक्ष त्वं स धि काले सु दे स भै
रवन म मृते ॥ ॥ थ ना पु पि पूजा
याय ॥ पशु जाग ॥ पशु न र्प नं ॥
पञ्च बलि स अग्नि सहि ह्य के
॥ पञ्च धारा सहि फय देश व
लि सं मालं ॥ मां सा हुति या नं
ला को पण ॥ पञ्च धारा वो य ॥
मम ई पूर्व माय क्षं याम्प भृक
वा धि नाशनं ॥ क्षी ल वा रु णं पु
स्ति सिद्धि गंधो द को ल र ॥ मध्ये
नु सिद्धि द्रव्य च सिद्धि काम म

वापुयान्। पञ्चपानाप्रथेकश्च
देवानां नुस्त्रिन्नारणं पञ्चधारापू
जा ॥ ऐंकीसौं ॥ सत्रधारायां
पाडकां ॥ पूर्व ॥ ऐंकीसौं
॥ सत्रधारायां पाडकां ॥ दक्षि
॥ ऐंकीसौं ॥ सत्रधारा
यां पाडकां ॥ पश्चिम ॥ ऐं
कीसौं ॥ सुगन्धादीकधाराया
पाडकां ॥ उत्तर ॥ ऐंकीसौं
॥ आनन्दमेरवायकीं श्री
सुन्दरीं सुरादेव्यै वारधारा
यां ॥ नमः ॥ षडङ्ग ॥ मध्ये
॥ रत्ना ॥ सिले ॥ अस्त्रेन वि
वेकन हलदिनवाले ॥ पूजनं
॥ मूल षडङ्गेन ॥ प्रावाह्य ॥ धेनु
मुद्रा ॥ जजमाननं लाजापय
के ॥ वाक्य ॥ क्षागमासञ्चरप्रश्न
पृनुतं जरपाखिते ॥ क्षीरान्विते
भवत शान्तिदध्ने पुष्टिप्रजायते
॥ ॥ पञ्चधाराल्हाये ॥ ममं प्रा
नधारायां विघ्ननाशफलप्रदं
॥ वंश्च गोड ॥ रत्नधारासेनुजायमा

यां व्याधिनाशफलप्रदं ॥ ॥
दक्षिणा ॥ शीलपञ्चमीमधारायां
आयुषादिफलप्रदं ॥ पश्चिम ॥
उत्तरसुगन्धधारयालक्ष्मीदादि
फलप्रदं ॥ उत्तर ॥ मध्ये ॥ धीर्वा
रायां मध्ये सर्बिषधारकं ॥ पञ्च
धाराप्रशिधाश्च यज्ञकर्मनिधि
धयः ॥ दध्यगोडा ॥ ३ ॥ मांसाहुनि
विस्पृहया ॥ विदेव ॥ ३ ॥ इन्द्रादि १०
॥ ब्रह्माद्यादि ८ ॥ हनुकादि १० ॥ स्य
सिनाङ्गादि ८ ॥ प्रागमयानविय
॥ विदेवआदि नं ॥ फलशः ॥ अम्भ
॥ सकलेऽकर्मनखड-नविय
माला ॥ ॥ भू-स्वाहा ॥ भुवस्वाहा ॥
॥ स्व-स्वाहा ॥ भूर्भुवः स्वाहा ॥ दुःस्व
हा दशापाननायस्वाहा ॥ का
लापाननायस्वाहा ॥ ध्यानदेव
॥ फलदेव नित्यस्वाहा ॥ लोकोन
मूलमंत्रनविय ॥ ॥ अक्षमोस
थायेभुसचोंगु ॥ अडङ्गमंत्रन
डये ॥ स्वप्नमदाचकं ॥ नवख
व्रखोल-नुगल-सखोअवृद्धि

खेसोचकंडुयेमाला॥शिरशुको
आशामंत्रवीनाडुयमाला॥शिर
शामंत्रनपदपेश॥ध्वमंत्रनड
ये॥मुखसअलिवलिसहितन
डये॥मांसाहुनियाये॥१०८॥
पानश्रुलिसन्पानानये॥॥प्र
रणावाक्य॥दिगधारंचैवसर्वग
नवडुकसहित॥योगिक्षेत्रपा
लस्थारिष्टपासर्वदेवासगरा
गरायुतामण्डलवन्द्यवर्क॥आ
ख्ययुक्तंचपूर्णअलिवलिसहि
नाः पञ्चपानादियुक्त॥समुत्त
सर्वदेवा॥अगिरिमुखयूनापा
नुडुर्गेश्वरीसा॥मांसाहुनि-प्र
रणासुमुहुस्तुस्वाहा॥हिसमुद्रा
वा॥पञ्चवलिसदाय॥बाधको
न॥दसवलिसदकोभोकपुय
॥॥समयविय॥ननोःभक्तर
सहिआहुनिविसंहय॥आदि
न्यया॥स्वानवा॥ॐ क्रौं क्रौं क्रौं
सूर्ययस्वाहा॥३॥प्रक्षसिस
मिध॥लोत्र॥रक्तवर्णमहा

नेजंरक्तपञ्चसुधारिणां॥सप्ता
श्वरथमाहर्धंग्रहराजंनमाम्य
हं॥घृताहुति॥सोमया॥अहम
प्रां॥प्रै॥प्रौ॥संस्वमायस्वाहा॥३॥
पलाससमिध॥स्तोत्र॥अंमृ
नागुमहागेनं॥पुण्डरिककरो
धनं॥हेसासनस्थितंदेवेनमा
स्यमृतेनन्दन॥घृताहुति॥॥
अंगारया॥पल्का॥कौ॥कीं॥कौ॥स
अंगारायस्वाहा॥श्वयरसिःस
मिध॥स्तोत्र॥स्कंदरूपधरदेवं
शक्तिहस्तहुतासनं॥लोहनाड
महादेजंभूसुनुप्रणमाम्यहं
घृताहुति॥॥पुधया॥ईल्का॥
वाँ॥वीं॥वीं॥सः॥बुधायस्वाहा॥४॥
अपामार्गसमिध॥स्तोत्र॥प
प्रासनस्थितंदेवंसोमपुत्रेश्व
सोम्यतां॥आययणाधिदेवे
संबुधरुघंनमाम्यहं॥घृता
हुति॥॥बृहस्पतिया॥तेद्यो
क्षाँ॥क्षाँ॥क्षौं॥सुवहस्पतयस्वा
हा॥५॥ब्रह्मगतसिसमीध॥

लोत्रा॥ वाचस्पतिमाहादिप्रि
थिनाम्बरविभूषिते॥ सकादी
नां गुरुस्वस्वतन्त्रमामिरसंन
मः॥ घृताहुति॥ ॥ तुक्कया॥ क
यगु॥ धौं धौं धौं सः शुक्लाय स्वा
हा॥ ३॥ गोविनिमिसमीध॥
लोत्रा॥ शुक्लदेव्यगुदेवं शुभ्र
पेमहाकवि॥ शुक्लाधिदेवता
यस्तु नमामि भृगुनन्दन॥ घ
ताहुति॥ शनिश्चरया॥ मास
॥ श्री श्री श्री सः शनिश्चराय स्व
हा॥ ३॥ संकाथसमीध॥ लोत्रा॥
दिवाकरसुत श्रीमान् दाया
हृदयनन्दन॥ नीलाञ्जनचयो
दिप्रियस्तनोमिशनीश्वरं॥
घृताहुति॥ राहुया॥ स्वाहा॥ धौं
श्री श्री श्री सः राहुवे स्वाहा॥ ३॥ उर्वी
समीध॥ लोत्रा॥ कालाधिपम
हाक्रोधं सिंहकाननू संभवं
अर्धजकलवर्णाभैतमामी
राहुवेवता॥ घृताहुति॥ ॥
कनुया॥ कोलो॥ प्रौं प्रौं प्रौं सः

केतुवेस्वाहा॥६॥कुशःसमीध
॥स्तोत्र॥अर्घ्यंभुजकारंस्पृष्ट
हस्तविचित्रं॥ॐमनगोत्रस
भूतंनमामीकेतुदेवता॥घृता
हुति॥जन्मया॥अक्षत॥ग्रौरी
ग्रौसःजन्मनेस्वाहा॥३॥वलसी
समिधा॥स्तोत्र॥ध्वेनश्चेनास्वर
धरोश्चेतचन्दनभूमितं॥हमया
साहितोदेवोजन्मदेवनमाम्यहं
॥घृताहुति॥शनिनवग्रह॥॥
ध्वनेलिगणवतुकक्षेत्र-यो
गिनी॥गणेशया॥पद्मो॥
आहुति॥३॥स्तौगणपतयस्व
स्वा॥घृताहुति॥गजवक्रास
हाविरंदत्तमोदकपाणिना॥
नीर्विघ्नंसर्वनीर्वारंगङ्गापुत्र
नमस्तुते॥॥वतुकया
अक्षत॥आहुति॥३॥श्रींश्रीं
वृद्धकथाथायस्वाहा॥घृता
हुति॥स्तोत्र॥नीलोत्पलमहा
नेजंयणहस्तंकजासर्प॥ना
गहारमहोदेववृद्धकायनम

स्तुते॥॥योगिनीया॥पञ्च
ही॥ब्रलागतसि॥आहुनि॥३॥
याँयोगिनीभ्योस्वाहा॥घृणाहु
नि॥स्तोत्रा॥त्रैलोक्यव्यापिनी
देवीकर्तिकाबालधारिणी
विघ्नमर्दकरादेवीयोगिनी
नेनमः॥क्षत्रपालया॥पुत्रा
नेद्यो॥आहुनि॥३॥शाँक्षत्रपा
लायस्वाहा॥घृणाहुनि॥स्तोत्र
॥क्षत्रपालमहादेवपिङ्गव
रात्रिलोचन॥प्रेतासिविन्दु
मुद्राचक्षत्रपालनमोस्तुते
॥॥प्रहाराणादि॥ब्रह्मायुगी
या॥पुत्रा॥आहुनि॥३॥क्रौञ्च
ब्रह्मायराणीअसिताङ्गभैरवा
यस्वाहा॥परमसीत॥घृणाहुनि
॥स्तोत्रा॥चतुर्भुजाचहंसस्था
हमाभाचतुरानना॥पिताम
हीविदमानाब्रह्मराणीत्वंनमो
स्तुते॥॥माहेश्वरीया॥नेद्यो

आहुति॥३॥क्रोंकें माह्यश्वरी
रुह्रभैरवाय स्वाहा॥अर्को
सि० समिध॥घृताहुति॥स्तोत्र
॥सखासनाकुराव रणात्रिने
त्राभुलधारिनी॥त्रे लोकभो
हनी देवी माह्यश्वरी नमोस्तुते
॥॥कोमारीया॥लुपु॥प्राहु
ति॥३॥क्रोंचें कोमारी चरणै
रवाय स्वाहा॥प्रयरसि॥समी
ध॥घृताहुति॥स्तोत्र॥शक्ति
हस्ता माहो माया मयूरसन
संस्थिता॥बालभावे महारु
द्री कोमारी च नमोस्तुते॥॥
वैष्णवीया॥मुक्॥प्राहुति॥३॥
॥क्रोंटें वैष्णवी क्रोधभैरवाय
स्वाहा॥वलगनसि समीध
॥घृताहुति॥स्तोत्र॥गरुदास
नमारुद्वशं खचक्र गणधरा
गौरवर्णा माहो माया वैष्ण
वी त्वे नमोस्तुते॥॥वाराह
या॥मास॥आहुति॥३॥क्रों

नैवाराही उन्मत्त भैरवाय स्वा
हा ॥ उन्मत्तसि समीध ॥ घृता
हुति ॥ स्तोत्र ॥ मीन हस्ता तुला
पस्था महो माया सुभी वरणा
॥ त्रिनेत्रा रो प्रघोराक्षा वारा
ही त्वे नमस्तुते ॥ ॥ ईश्वरायणी
या ॥ कयगु ॥ प्राहुति ॥ ३ ॥ कौं
पै ईश्वरायणी कपाली स भैर
वाय स्वाहा ॥ सनी काथ समी
ध ॥ घृता हुति ॥ स्तोत्र ॥ कुञ्ज
रासनमा रुधा सहस्राधा
यवग्रिनी ॥ अने कालिय हता
वी ईश्वरायणी त्वे नमोस्तुते ॥
चा मुरागया ॥ म्वान ॥ आहुति
॥ १ ॥ कौं ये चा मुरागय भीषन भैर
वाय स्वाहा ॥ वलसि समीध ॥
घृता हुति ॥ स्तोत्र ॥ त्रेता सनीम
हा रौद्र मुराग माला सुसोभनि
॥ उर्ध्वकेशि चकं काली चा मुरा
त्वे नमोस्तुते ॥ ॥ महालक्ष्मीया
ईल्का ॥ कौं शं महालक्ष्मी सं

हरभैरवाय स्वाहा ॥ कृष्णः समी
धः ॥ घृताहुतिः ॥ स्तोत्रः ॥ देवाङ्गे व
न्दसंधारी विश्रुतवरधारी नी
सिंहस्थि महो देवी महो लक्ष्मी
नमोस्तुते ॥ ॥ मध्यपीठया ॥
व्यातानां ॥ आहुतिः ॥ ऐं श्रीं ताद
पीठमेरुक्षत्रकौलाहे ह्रूं श्री
कृष्णिकां वा स्तुतिं श्री कृष्णं च
केश्वरी स्वाहा ॥ ॥ समीध-व्या
नां ॥ घृताहुतिः ॥ स्तोत्रः ॥ प्रसन्न
क्षत्रस्थिता देवी अष्टसक्तनिवा
सिनी ॥ अक्षभैरवसंयुक्तं अक्षमा
मातृनमोस्तुते ॥ हतिनवपीठ ॥
॥ ततोऽङ्गादिपठ ॥ एयुका ॥ अ
र्कपातसमीधः ॥ आहुतिः ॥ क्रौं
लूं ईशाय वज्रहस्ताय मुराधिप
तय स्वाहा ॥ स्तोत्रः ॥ ईशसुरपति
शैववज्रहस्ता महो बला ॥ शान
यज्ञाधिपो देवस्तस्मै ईशाय नमः
नमः ॥ आहुतिः ॥ प्रकालाहसिं ॥
क्रौं हूं अग्नये ॥ शक्तिहस्ताय नमः
धिपतय स्वाहा ॥ स्तोत्रः ॥ शानने
जमाहा देवरक्तवर्ण महो भुनि

स्तोत्रमर्चयेत्ताधिपौदर्वनेऽनृत्पखङ्गधिय ५०
हं त्वङ्गहस्ताधारित्ये एभतायनमोस्तुने

शक्तिहस्तामहानेनोवैस्वामार
नमस्तुते॥ गिसिवेहि॥ मिक
सि॥ ॐ मुंयमायदराहलाय
प्रेताधिपतये स्वाहा॥ स्तोत्र॥
दराहलाय मोदेवोधर्माध्य
क्षोः महावला॥ कासमेधनिभं
देहधर्मा राजयने नमः॥ कोल
न॥ अवरसि॥ आहुति॥ ॐ क्षं
नेऽनृत्पाद्ये खङ्गहलाय राक्षस
धियतयनमोस्तुते॥ मास॥
अपासार्ग॥ आहुति॥ ॐ वूँव
हलाये पासहलाय जलाधि
पतये स्वाहा॥ स्तोत्र॥ पाशह
ला महादेव जलराजो नागरा
जनमा मम हं नेद्योऽवरसि
आहुति॥ ॐ यूँ वायुवैध्वजह
लाय पवनाधिपतये स्वाहा
॥ स्तोत्र॥ सर्वाप्राणात्मकश्चैव
सर्वज्ञा वायुदेवता॥ अजहला
महाप्राणं नमोऽप्राणात्मने न
मः॥ अति॥ सनमिसि॥ आहु
ति॥ ॐ सूँ ऊँ वेराय गगहला
यधनाधिपतये स्वाहा॥

स्तोत्र नक्षत्रारण्य सर्वेषां स्व
 मराजा प्रकीर्तिना ॥ पादापावध
 रोवीरः कवेराय नमोस्तुते ॥ ॥
 पलमोसः ॥ सातिकाथसि ॥ आ
 हुति ॥ ॐ ईशानाय विश्वलह
 स्नाये भूनाधिपतये स्वाहा ॥
 स्तोत्र ॥ सर्वविद्याधिपो देव शिर्ष
 नो नामनामन ॥ मूलपाणिम
 हा देवस्त्रैलोक्याधिप स्वस्वम् ॥
 ॥ अक्षत ॥ इवतसि ॥ आहुति
 ॥ ॐ अं अनन्ताय चक्रहस्नाये
 नागाधिपतये स्वाहा ॥ स्तोत्र ॥
 पन्तधिपतिदेव अनन्त नागाधि
 पते ॥ पातालैव सते नित्यं अन
 नायनमस्तुते ॥ पुत्रा ॥ अश
 आहुति ॥ ॐ अं ब्रह्मणे पद्मह
 स्नाय स्वर्गाधिपतये स्वाहा ॥
 स्तोत्र ॥ पद्मयोनिश्चतुर्भुज
 दिस्थाने निवासिन शृङ्खल
 नात्मको नित्यं तस्मै ब्रह्मात्म
 ने नमः ॥ शनिदशलोकपाल
 ॥ ॥ तमोऽप्रस्वस्थामादिपूज
 ना ॥ अस्वस्थामाया ॥ पुत्रा ॥ आ

हुति॥ ॐ अस्वस्था मे स्वाहा ॥
लोत्र॥ ब्रह्मजाति नमस्तुभ्यं प्रोणा
चार्य सुतोन्नतमः॥ वेदवेदाङ्गसंपू
र्ण अस्वस्था मायवैनमः॥ वलि
या॥ शल्का॥ आहुति॥ ॐ वलये
स्वाहा॥ लोत्र॥ भूमि स्वर्गससं
प्राप्तिः भूमिदानेन तत्फलं॥ श
क्रदेवो भविष्यति न मामिव लि
देवता॥ ॥ व्यासया॥ अक्षत॥
आहुति॥ ॐ व्यासाय स्वाहा॥
लोत्र॥ सर्वशास्त्रार्थज्ञानव्यं न
को नर्कः प्रतिनिधिर्ज्ञे॥ प्रवक्षं
नानि शास्त्रार्थं नमस्ते व्यासदे
वता॥ ॥ हनुमन्तया॥ कयगु॥
आहुति॥ ॐ हनुमन्ताय स्वा
हा॥ लोत्र॥ एकवर्णमहावीरं
वायुपुत्रविलोचनं कंठमु
लं प्रीतिहनुमान्तायवैनमः
॥ विमिश्रनया॥ चाना॥ आहु
ति॥ ॐ विमिश्रनाय स्वाहा॥
लोत्र॥ पुनस्तव नमस्तुभ्यं
लंकाराक्षमनमोस्तुते॥ रा
क्षसाधिपतिदेवो नमस्तु

विभिषनः॥ कृपाचार्याः॥
मासाः॥ आहुतिः॥ ॐ कृपाचार्याः
स्वाहा॥ लोत्रः॥ राजकृषिनमस्तु
भ्यं भारवाजं कुलोभवः॥ कृप
स्वरणिमास्तु स्वाधाराभवति क
मः॥ पशुं रामबा॥ मुक्कः॥ आहु
तिः॥ ॐ पशुं रामाये स्वाहा॥
लोत्रः॥ कार्तिकीवीरनस्यति पशुं
हृत्तोमहाबलः॥ निक्षत्रैककविं
श्रोत्वा पशुं रामाये नमः॥
मार्कण्डेयाः तेष्टो॥ आहुतिः॥ ॐ
मार्कण्डेयाः स्वाहा॥ लोत्रः॥ वट
क्षसमाहूतं ध्वजमेकमुवा स
सा॥ मविराजनमस्तुभ्यं मार्क
ण्डयनमोस्तुने॥ इति चिरं
जीवि॥ ॐ नजमानप्रणीक्षा
आहुतिः॥ ५४॥ ऐं सो वः॥ पु
नः॥ आहुतिः॥ ५४॥ प्रनिष्ठा॥ ऐं की
सौ प्रनिस्थितासि देवत्वं सुप्रनि
क्षाभुवनत्रयं॥ सानिध्ये प्रनि
पभ्योसि नजमानादिष्वप्यत्र
सन्नोति विषये नित्यं सन्नोरा
ज्येस्तथैव च॥ नजमानसंभू

नोयं सुपुत्र पशुवां धवा सुप्रगी
स्वावरा भवन्तु ॥ ॥ आचार्य
यात ॥ आहुति ॥ ऐं क्रौं श्रीं क्रौं
क्रौं क्रौं आचार्याय मंत्रसिद्धि
रस्तु स्वाहा ॥ ५४ ॥ लोत्र ॥ पारंग
प्रहलकपाल मुक्क कलं करे स्क्
रौठ मुलयव पु ॥ सर्वाङ्ग वदुखा
रहा धवरा देव्यास्थि माला
भृत्त ॥ विश्रद्धी जनिय प्रसाद
समय भूयोपि संभूतय ॥ पा
याङ्गः परया वसान समये का
पालिको सद्गुरु ॥ आचार्य पूजा
॥ शान्तिकाहुति ॥ ॐ भूर्भुवः स्व
क्रौं क्रौं फट् स्वाहा ॥ १०८ ॥ ऐं क्रौं
श्रीं शान्तिघोरत्तरि क्षां क्षितिर
पिचनथा शान्तिरन्तोषधी श्रवि
श्वे देवाश्च शान्ति ॥ विधिरपि प
वनो वं क्रि रुद्रश्च शान्ति ॥ प्राण
स्य त्वं प्रशान्तिरविशसिथ हरे
स्त्वं च हन्सो गसर्व ॥ शान्त्या हु
न्या च ये वांग्रुह कविधिना शा
न्ति पूर्णा मुहुन्या स्वाहा ॥ शा

निर्व्वतु॥ पुष्पीकाहुनि॥ मूल
मंत्ररा॥ १०८॥ ऐं श्रीं श्रीं देवेभ्य
पुञ्जयेस्व हरि विक मला पा
वानसकन्दमाने जिष्णु हेरम्ब
नाथो मनसि ज उपरोक्त लाक्षे
षधीश ते च कुर्वतु पुष्टिं धनु
मुनवनितासयुता सर्वदाभिः
पुष्पाहुत्पाचयन्त गुरुमुख
विधिना पुष्टि पूरणं कृते न स्वा
हा॥॥ धवः ध्वान्पादो ह्रीं ह्रीं
॥ ह्रीं ह्रीं सौं विपु राये धान्य पु
ष्टि स्वाहा॥ लाजा॥ ह्रीं ह्रीं सौं
विपु राये लाजा पुष्टि स्वाहा
समीध॥ ह्रीं ह्रीं विपु राये स
मीध स्वाहा॥ गुदोदक॥ ह्रीं
ह्रीं गुदोदनाय स्वाहा॥ श्री फे
ला॥ मूल मंत्र न ज प ल ये॥
आज्ञा मंत्र न ड य ॥ दध्वादन
॥ ह्रीं ह्रीं दध्वादन नाय स्वाहा
॥ जंवीर॥ ऐं ह्रीं सौं विपु राये
जंवीर स्वाहा॥ पायस॥ ह्रीं
ह्रीं विपु राये पायस स्वाहा
वदरि फल॥ प्रियङ्गु॥ सु

मुखमशानपुष्पा॥चेननिल
कलमनिल॥रक्तनिल॥ईल्का
पल्का॥त्रिकदृश॥त्रिफला॥रु
पकेशर॥पञ्चकेसर॥चन्दनगो
ली॥गुग्गुली॥श्रीसुत्रिपुरायै
गुग्गुस्वाहा॥शुक्लकपू
र॥कस्तुरी श्रीखराडा॥सुरकुं
कुमा॥गुडचि॥सर्वावधी क
रा॥मूल॥फल॥इक्षु॥पक्वा
न॥शुक्ली॥त्री॥विपुरायै पक्वाने
स्वाहा॥इक्षु॥कुं॥विपुरायै
इक्षुस्वाहा॥कुं॥विपुरायस्वा
हा॥मूल॥मंत्रन॥कै५
है५सै५विपुरायैस्वाहा॥
पीनमूलमंत्रनहुत्वा शुक्ल
क्षपुष्पना॥अर्घपात्रसजया
त्र॥ऐंलीसौस्वाहा॥होम५०
॥अन्नेसंकल्प॥घृतदीप॥
क्षदोईनाल॥गायत्रीने॥ज
पलेपेधार॥मंत्र॥शान्तिश्री
रत्नरिक्तक्षितिरपिचनथाशा
निरन्तोषधीश्चविश्वेदेवाश्च
हामलभोइमलनपाडय १०

शान्तिविधिरपि पचनो वाक्कि
रुद्रश्च शान्तिः॥ वारास्य न्यप्र
शान्तिरविशशिथ हरिरुत्पेच
धसो ग॥ सर्वशान्ता हुत्पाव
येषां गुरुकविधिना शान्तिपु
रणा कन्यकरा घृतसर्तिका
दीपस्वाहा ॥ घृताहुतिः॥ मूल
मंत्राधार १०८॥ आहुतिः॥ ऐं
क्षीं श्रीं नुनेभ्यः स्वाहा॥ ऐं क्षीं
श्रीं नुनातिरुक्ते स्वाहा॥ ऐं क्षीं
श्रीं ज्ञानाज्ञानं न सर्वक्रियते
स्वाहा॥ ऐं क्षीं श्रीं अनिरुक्ते नु
होसि स्वाहा॥ बलिने पानसं
वसलपेन कोऽक्षयमालः॥
कुराऽप्या आप्तेऽप्रकोरा सतये
॥ ॥ अंतबलिद्वयपानसवियः॥
ऐं क्षीं श्रीं रुदेभ्यः स्वाहा॥ पूर्व
दक्षिणा॥ ऐं क्षीं श्रीं मानुभ्यः स्वा
हा॥ पश्चिमः॥ ऐं क्षीं श्रीं गणैभ्यः
स्वाहा॥ उत्तरः॥ ऐं क्षीं श्रीं यक्ष
भ्यः स्वाहा॥ इशारो॥ ऐं क्षीं श्रीं
गुह्येभ्यः स्वाहा॥ आग्रया॥ ऐं

ॐ श्रीं असुरेभ्यः स्वाहा ॥ नैऋत्य
॥ ऐं श्रीं असुरेभ्यः स्वाहा ॥ ॥
नैऋते ॥ ऐं श्रीं रक्षभ्यः स्वाहा
॥ वायुव्य ॥ ऐं श्रीं विष्णवेभ्यः स्वा
हा ॥ मध्ये ॥ ऐं श्रीं नक्षत्रेभ्यः
स्वाहा ॥ ईशारणे ॥ ऐं श्रीं राशि
भ्यः स्वाहा ॥ आग्नेरौ ॥ ऐं श्रीं
विश्वेभ्यः स्वाहा ॥ नैऋत्या ॥ ऐं श्रीं
श्वेत्तपालेभ्यः स्वाहा ॥ ॥
वायुव्या ॥ ऐं श्रीं वरुणानील
योर्मध्ये स्वाहा ॥ हनिधनवलि
॥ नतोवह्निवलि ॥ ऐं श्रीं ईश
वे स्वाहा ॥ ऐं श्रीं यमाय स्वाहा
॥ ऐं श्रीं अमये स्वाहा ॥ ऐं श्रीं
श्रीं नैऋत्याय स्वाहा ॥ ऐं श्रीं
वरुणाय स्वाहा ॥ ऐं श्रीं वायु
व्य स्वाहा ॥ ऐं श्रीं कुबेराय स्वा
हा ॥ ऐं श्रीं ईशानाय स्वाहा ॥
ऐं श्रीं अनन्ताय स्वाहा ॥ ऐं श्रीं
श्रीं ब्रह्मरो स्वाहा ॥ ऐं श्रीं वि
ष्णवे स्वाहा ॥ ऐं श्रीं श्वेत्तपाल
ये स्वाहा ॥ ऐं श्रीं ओडियान
पीठाय स्वाहा ॥ ऐं श्रीं श्रीजाले

धरपीठये स्वाहा ॥ ऐं श्रीं श्रीं पूर्ण
गिरिपीठये स्वाहा ॥ ऐं श्रीं श्रीं
कामरूपीठये स्वाहा ॥ शनिवहिव
लि ॥ आचार्यदक्षिणा ॥ वाचन
कलशसन्तये ॥ वसिष्ठराम ॥
अस्त्रिणा ॥ संसवपासनं पञ्च
यासरां ॥ ननोमूलमंत्रेन सम्य
रार्थाक्षुति ॥ श्रवासेलघुने प्र
रार्थाजवा ॥ प्रडकारस्वानमा
लानय ॥ जजमाननंधवकजो
नकंनय ॥ प्रो ईं प्रानव्यवल्ली अ
मृत्नकरनेली आदिशक्ति परायी
॥ मायामायाक्षरपीठफटिकम
रणीमयीमामनाङ्गीमडङ्गि ॥
शानीज्ञानार्थसुपिमलिनपरम
पीनादहंकारमंत्री ॥ भोगिभो
गासनस्थाशुभवशसिकरी
मुन्दरी ऐं नमस्ते ॥ ॥ प्रार्थपत्न
यिनैः परस्परयुनैः द्वित्रिक्रमा
यश्चरौ ॥ कथैः क्षान्तगनैः स्वरा
दिभिरथक्षान्तैश्च नैः सस्वैः
॥ नामानिनिमुरैः भवतिरक्ल
यान्यभ्यन्तगुह्यानिन्यः नैभ्यो

भैरवपन्निविंशतिसहस्रेभ्यः
परेभ्योनमः॥ एतन्मृनाम्युनिवि
मध्येलशनवालक्षीपस्फुरत्प
रानन्दनकाननान्तः॥ श्रीकल्प
सप्तनलपश्चिमवक्तनेत्रगे
हस्तराद्रतमहामणिपीठिका
यां॥ श्रीमंत्रिकोरावहिरस्यक
कोरावाह्येविकोराः युग्धश्च
तुद्देशकोरायुक्तः॥ सत्तासृषो
ऽशदलानवतलोकम्॥ पञ्च
तुर्मुखमहंप्रणमामिर्वक्तः॥
॥ ऐं ह्रीं श्रीं क्लीं श्रीं सुं स्वाहा
वोषट्॥ लुं ॥ लुं लुं प्रणां
म्य॥ प्राव ॥ म नं वन्दन
ताम्बुल॥ वद्धेस्त्रयान्॥ ॥
आसंसायथे॥ ऐं ह्रीं सौमित्रा
र्थासत्तुकलशस्थानिदितवैश्वान
रादिदेवतादिव्यनयमुप्रीता
वरदाभवेत्तु॥ गुरुप्रांसरोभ्यः
शुभंभवतु राजाधर्मविजयी
रक्षुप्रजासुखिनः सत्तुदेशभो
दयोस्मुराष्ट्राधिपते श्रमक

राजः स्वर्गसिद्धिप्रदापोदयोस्तु
अस्मदादीनांसगरास्परिवो
राणां आयुरारोत्तमैश्वर्यजन
धनलक्ष्मीसन्तानिसन्तानसिद्धि
रस्तुदिपदस्तुस्यदानां शुभं
भवतु सर्वसत्त्वासुखिनसंस्तु
पञ्चरूपकालेवर्षिभवतु स
र्वपरिपूर्णमस्तु ॥ जाप ॥ मरा
लदयके ॥ केगडावोवोय ॥ वे
तस्वाननय ॥ ॥ स्तोत्र ॥ ॐ नमो
ग्नये ॥ नेजास्वस्थातिविश्वं भ
वकलसहरं ॥ पावनं भूभूवः ॥
स्वः सर्वोयं विश्वव्याप्तं मुनिजन
नमिन्नं भासुरं शक्तिहस्तं ॥ नमो
श्चाभ्यन्तरान्माकरा मयिनिक
रं शुद्धमशुद्धानि सुद्धमं ॥ वन्दे
वरणाध्यके तु विजनिखिलगुरुं
सोवकेशं भवन्तः ॥ मृगवेदो य
स्य पादो यत्तुरपरपदः सामवे
दो य हस्तो ॥ एषो धूर्वादिनीयं
शपठवदनी व्याहृतं ब्रह्मचो
षः ॥ गायत्री यस्य गात्रं नय

नमुपनिषद्ब्रह्मश्रोत्रेवदक्षः
विष्णुप्रद्युम्नसूक्तिः भवतु वसुम
नीः यज्ञरूपी वराहः ॥ यये येन
सुसस्थादिसि विदिशि समा स
स्थीना देवना या क्रुणोवा वदि
मध्ये सकल परिजना मण्डल
स्थान्धिले वा ॥ ते सर्व सन्तु देवा
अभिमत वरदा मंत्र मन्त्रो वसु
धा मुद्रा पूजा विधाना यज्ञेन प
रिं सन्त क्षेपेन दोषा क्षमस्व ॥
इन्द्राद्या लोकपालाः स्वसहिग
वसिताः स्वस्वमुद्रा स्वयुक्ताः ॥
आदि त्पादि ग्रहेशाः वसनिभु
वसदा जन्म देवा सोरुपाः ॥ मृ
क्षाः योगाः सुनीर्था गरा गुरुव
दुकाः सरिण्डले मानृ वासिधिः
॥ श्रेयो ददातु भवतु वसुमनी
यज्ञ पूर्णा सुभो रतु ॥ ॥ कलश
॥ देवो मे सादृशीनां युतमविव
पैटैः पल्लवैः कुम्भ मुक्ति गोक्षि
रै र्जायनो यै ॥ कुसुम फल सु
गन्धो मधी प्रीति हरतां ॥ दोषैः
दवा क्षनाद्यै मन्त्रे यत्न हर

शेषासि सिन्दुरसर्वा पुष्पैः
वेद्यंधुपैः स्वकर्जविधिकेन न
मे पूर्णं कर्म ॥ वलिया ॥ प्र
वक्ष्यामि मोक्षोपदिशा
पूर्वादिवा मे स्थिताक्षेत्रे सो व
उभूतङ्गारहतं हेरं वनाथाय
वा ॥ श्मशाने श्वरमादिदेवव
सुखाः सोकादिदुःखापहानि
न्यूनद्वयेन मामि स न न वल्पा
व ॥ पूजाविधिः ॥ मूलया ॥ य
दि दोषास्त्रियस्तस्य आचार्य
स्य विशेषतः ॥ मंत्रमुद्राविहि
तस्य शास्त्रं पथतदोषतः ॥
मात्राक्षराही दिनत्वादपव
गादिषोषतः ॥ शुशीचिला
दिभंगेन येनेतपठनकर्म
सु ॥ देवशास्त्राद्यशुद्धे न दे
हिना ॥ क्षत्रुमर्हति न न सख
कृष्णुशिवमङ्गला ॥ त्वंगानि
सर्वभूतानां सस्थितान्त्वेव
चले ॥ अतश्चारेण भूतानां
दृष्टान्त्वे परमेश्वर ॥ ॥
कर्मणा मनसा वाचानो

पापादिक मर्मन॥ अक्षतं वा
क्वहिन ननु नत्र पुरे हुतासन॥
॥ मंत्राहिनं क्रियाहिनं भक्तिहिनं
नथैव च॥ अपलोमा च न हीन
क्षम्यतां परमेश्वर॥ ॥ पापो हं
पापकर्माणि पाप्माना पाप
संभवा॥ त्राहि मां देव देवो सि
सर्वपापहरो भवेत्॥ ॥ अथ
गन्धादि॥ अनेत्र सरनं नाति
तु मेव सरणं मम॥ नस्मान्का
रैर्भावेन रक्षारक्ष मां परमे
श्वरी॥ ॥ आसंसासोत्र॥ देव
कलेश॥ आसिर्वाय॥ नर्प
रा॥ एकेनेक॥ अम्बे पूर्वक
॥ प्रायश्चित्त होम॥ हौं स घो जा
नाय प्रायश्चिनाय स्वाहा॥
हौं वाम देवाय प्रायश्चिनाय
स्वाहा॥ हौं अघोराय प्रायश्चि
नाय स्वाहा॥ हौं नत्पु रुवाय प्रा
श्चिनाय स्वाहा॥ हौं ईशानाय प्रा
यश्चिनाय स्वाहा॥ ॥ गायत्री
॥ ऐं त्रिपुरा देवी विष्णु हेतकीं का
मेश्वरीं विमलसौ ननो कीं

नमो दयावान् ॥ शनिप्रायचित्त
होमः ॥ वस्त्राप्रणिता विसर्जन
॥ अष्टमंत्रणः प्रणीताभिषेक
॥ रुकारवायुविजं न्यादि ॥ ॥
प्रणीतजलकलशसंतये ॥
चतुर्वेदिसतया ॥ रुशयान्धिफे
जवृक्षमिसडये ॥ वाक्य ॥ अ
र्कनाशयने व्याधिपलाशे स
र्वकामदा ॥ खदिरश्च र्थलाभा
या-पामार्गावदुपुत्रका ॥ अश्च
स्थं च भवेद्रूपं सोभाग्यदमु
द्वरा ॥ रामसिः मयने पापं दुर्वा
चायुप्रवर्धनं ॥ कलसिद्धिं रु
शन्यस्य न्याग्रोधः सर्वकामदे
स्वाहा ॥ ॥ वलि विसर्जनं ॥ भ
स्मनिलककाया ॥ ॥ जनमान
यादिन सकले इने चके ॥ शे
महोमा ॥ ऐं श्रीं श्रीं कपिलाग्रये
स्वाहा ॥ ऐं श्रीं श्रीं जठराग्रय स्वा
हा ॥ ऐं श्रीं श्रीं रुद्राग्रय स्वाहा
॥ ऐं श्रीं श्रीं नेत्राग्रय स्वाहा ॥
ऐं श्रीं श्रीं धूमाग्रय स्वाहा ॥
ऐं श्रीं श्रीं शिवाग्रय स्वाहा ॥
ऐं श्रीं श्रीं भैरवाग्रय स्वाहा ॥
ऐं श्रीं श्रीं कामाग्रय स्वाहा ॥

ऐं क्रीं श्रीं महाने जाग्रये स्वाहा
॥ ऐं क्रीं श्रीं कालाग्रये स्वाहा ॥
शनिदसाग्नि ॥ क्रीं क्रीं क्रीं स्वाहा
॥ ॥ सेष होमा ॥ पञ्चविंशर्जन
॥ गच्छ गच्छ सुरभेष्ट आत्मास
न्सारवाहनं ॥ पञ्चब्रह्मादयो
देवाने त्रैलोक्ये हुतासनः क्षम
स्व ॥ अर्घ्यपात्रं नयन्तु इयं का
वुभोकपुय ॥ दिशाशे देवदे
वी स्वस्थानं ॥ नाम्बूलं दद्यात्
॥ ॥ दीपजागजुलसा अग्निवि
सर्जनयाये मनेव ॥ भवत
सा वि सर्जनयाय ॥ न्यासलि
काये ॥ हृदय मंत्राणां आत्मवी
नयाय ॥ वाचा दनतु पलिश
दाय ॥ नमस्कारयाय ॥ ॥
यथा वा एतान्पादि ॥ ब्रह्मा अग्नि
सदोय ॥ कृताय कर्मणो स्वा
हा ॥ कृताय कर्मणो स्वाहा
पलिदोय ॥ थाय थाय संघो
ये ॥ जजमान नृवन्द्यादि
अभिदोय ॥ वन्द्यादि ॥ सि
न्धु ॥ स्वगन्मोहनी स्वान

विय॥ आसिर्वादा॥ सिंदूरमुं
नकिनीयानलवद्दये॥ ॥
कुल्लभ्रजादा॥ रात्रीसदी
पजागवसलपेविधान॥ ॥
चक्रभक्षणायाये॥ होमसदो
यमान॥ विषान्नधूनशक्
अग्निविसर्जनयाये॥ दीप
जागधूनके॥ शनिकामाग्नि
दियनोविधि समाप्तम्॥ ॥ ३॥
ननोका माग्नि या देवाश्चन॥
पशुनर्पणायायविधिवोसं
नयानुल॥ हिंसायायवेले
स्तसनयावसकनाडकाय
मान॥ ॥ नजमाननंथालभ्र
सफ्रया॥ शिरनये॥ नवयाधो
नवसतय॥ खवयाधोस्व
वसंतय॥ नुनिनेपायाड्ये
॥ गुगलनुगलयाथासं सो
संतय॥ प्राभरानंकोरणा
यके॥ क्रिपेनके॥ खनेस्था
ययाविधी॥ प्याथसहरदि
वयमान॥ सासाहुनियान
गर्दनयागुनयमान॥ ॥
लाको॥ ॥ विचेकनहर

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ॥
पञ्चधारा पूजा ॥ लासेलेनिस्यं
५ थं ॥ शिरसं पञ्चा मृतादिस्ना
नं ॥ अर्घपात्रोदके समाञ्जनं
॥ मूलनस्त्रये ॥ ॥ वनसुसस्का
र ॥ चन्दनसिन्दुर ॥ नजमका
॥ अडुवाला ॥ दिल्ली आदिनन
य ॥ पञ्चरत्नसुनुसनय ॥
५ सुं सुं सुं सुं सुं पञ्चरत्नाय
पाङ्कां पूजयामी नमः ॥ मूल
ननादन ॥ ह्याङ्कापकारणप
ताका ॥ पञ्चपताकानय ॥ श्री
हिपात्रसनय ॥ स्वस्वमंत्रन
मां सा हुतिविय ॥ खोलमया
चकं ॥ नवखवा ॥ नुगलसे
सोथपदिखेस्वचकं डयमा
ला ॥ शिरआशामंत्रनं नफल
मे ॥ २१ ॥ ध्वमंत्रनं डय ॥ मुख
स ॥ अलिवालि साहिनयाग
वडय ॥ यनामालकोष्क
नां मासा हुतिविये ॥ ६३ ॥
सम्बन्ध १६६ ॥ सालपोषशुक्ल
दशमि वधवार शुभम् ॥

